Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र द्वारा संगृहीत।

श्रीजम्बु

और

परदेशी राजाक चौपाई।

का

मयावधि

कृपा करें

इसका

For Private and Personal Use Only

॥ कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ॥

॥ अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ ॥ गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ॥

॥ योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥ ॥ चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोधसंस्थान एवं ग्रंथालय)

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १३६५

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
हॉटल हेरीटेज़ की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनि चेतन विजयजी कृत

१। श्रीजम्बु चरित्र।

पृ० १—६०।

ऋषि जयमलजी कृत

। परदेशी राजाकी चौपाई ।

पृ० ६१—१३०।

[redacted] Dass, "Brilliant Press," Calcutta.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

॥ अथ श्री जम्बू चरित्र प्रारम्भते ॥

(दोहा) श्री अरिहन्त नमो सदा, अरी न आवे पास । अष्टकर्म दूरें टले, आठों गुण परकाश ॥ १ ॥ सिद्ध नमो बहु भावसुं सिद्ध होय सब काम । अन्तर ध्यान लगायके, सदा जपों तुम नाम ॥ २ ॥ आचारज को वन्दिये आतम निर्मल होय । लक्ष चौरासी भरमना, फेर न आवें सोय ॥ ३ ॥ उवझाया पद नित नमो, पावें उत्तम ज्ञान । मन वचन काया सुद्ध कर, निशदिन कीजै ध्यान ॥ ४ ॥ साध सकल वन्दो सदा, पाप सवें मिट जाय । पञ्चनाम जपतां थकां, पावें सुख अधिकाय ॥ ५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(चौपाइ) परम पुरुष परमातम देव, बन्दों भाव सहित नित मेव । गुरुके चरण नमो तिर काल, गुरु सम कोइ न दीन दयाल ॥ ६ ॥ दया करो मुझ सारद माय, तिमर हरो नित लागुं पाय तुम प्रसाद भाषा कछु करों, जम्बू चरित्र नाम ते धरों ॥ ७ ॥ राजग्रही नगरी सोभन्त, समो सरण राजें भगवन्त । बारे पर षदा बैठें जिहां, श्री जिन बीर बिराजें तिहां ॥ ८ ॥ राजा श्रेणिक सुने वषाण, अमृत धुन बोलें भगवान । एक देवता आयो तिहां, बचन प्रकाशें भगवन जिहां ॥ ९ मेरा थित केता भगवान, ते तुम कहो वचन परमान । भगवन कहें सुनो सुर बात, तेरा थित दिन सात विष्यात ॥ १० ॥ एता बचन सुनि जब देव निज थानक पहुंता ततखेव । पूछें श्रेणिक राजा तिहां ए कुन देवत उपजें किहां ॥ ११ ॥ श्री भगवान कहें सुन राय, ए सुर जम्बू स्वामी थाय । चरम केवली जम्बू स्वाम, सुनो पाछला भवको नाम १२ ॥ श्रेणिक सुन जम्बूकी बात, पांचें भवमे कहो विष्यात । एहिज जम्बू द्वीप मझार, भरत क्षेत्र सोभे विस्तार ॥ १३ ॥ तिहां इक नगरी है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुग्राम, जिहां बसे इक रावड़ नाम । पामर जात कहे सबकोय, रेवती त्रिया पुत्रहै दोय ॥ १४ ॥ इक जवदेव पुत्र गुणधाम, जावदेव दूजा सुतनाम दिक्षा ले जवदेव सुजान, करें बिहार जपें जगवान १५ ॥ पञ्च महाव्रत पालें सदा, क्रोध मान माया नहि कदा। मुनि जवदेव महा गुणवन्त, सुद्ध चेतना ज्ञानी सन्त ॥ १६ ॥ (दोहा) इकदिन मुनि जवदेवजी पहुंचे नगर सुग्राम। बिहरण कारण आवियो, निज बन्धवके धाम ॥ १७ ॥ जाव देव परणा थकां कङ्कण डोरा हाथ । नारि नागिला परिहरी चले जाव जव साथ ॥ १८ ॥ गुरु पासें आए जवें जावदेव जवदेव । जवसे पूछें साधुजी जावदेव का हेव ॥ १९ ॥ हो जव तुम निज भ्राता को ल्यायेहो प्रतिबोध । कठिण साधको पंथ है ज्ञान बिना नहि सोध ॥ २० ॥ कहें साध जव-देवको सुनो हमारे वैन । दिक्षा लेवे बंधवा तव पावें सुख चैन ॥ २१ ॥ (चौपाइ) जावदेव जाइ के लाज, दिक्षा लिया पास मुनिराज । बार बरस पाल्यो चारित्र, नेम धरमसुं रहें पवित्र ॥ २२ ॥ एक समे जव जाइ जान, हंस कियो परलोक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यान । तद परिणाम गयो फिर भाव, मरण भ्रात कौ पायो दाव ॥ २३ ॥ भाव चिन्तव्यो जाउं तिहां नारि नागिला छोड़ी जिहां । तिनसुं जाय करो घर वास, करि बिचार तव हुई उदास ॥ २४ ॥ आयो निज नगरी सुग्राम, सोधत फिर नागिला बाम जा दिनसो तजि स्वामी गयो, त्रिया नागिला तप बहु कियो ॥ २५ ॥ देह क्षीण करि साधे धर्म जिन आगमके जाने मर्म । आवेठे दरशन नागिला देवल पास भाव तव मिला ॥ २६ ॥ पूछें भावदेव सुन नार, बच्चन एक मेरो उरधार । भावदेव ब्राह्मण था एक, ताकी नारी महा सुबिवेक ॥ २७ नाम नागिला ब्याही [illegible], प्रीतम छोड़ गयो तत काल । तेह [illegible] री, जे तुम देखो सो कहो खरी ॥ २८ ॥ तवें नागिला कियो बिचार लखी चलनसुं निज भरतार । [illegible] संजम सुं भ्रष्ट थाय, तिनको सती कहें चितलाय ॥ २९ ॥ तुम सुं तिनसुं है कछु काम, ते तुम बात कहो गुणधाम कहें भावजी सुनो बिचार, मेरी त्रिया नागिला नार ॥ ३० ॥ कहें नागिला हुं तुं तेह, भाव कहें दुर्बल क्युं देह । सुनो साधजी मेरी बात, तुमतो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संजम लियो बिख्यात ॥ ३१ ॥ ता दिनसुं तप संजम धरुं, छठ पारणे आंबिल करुं । भाव कहें तव बचन प्रकाश, हमसुं नारी कर घरवास ॥ ३२ भोग १ वें आप न दोय, नार कहें संजम मत खोय चारित्र छे चिन्तामणि रत्न, ते मत बिसरो राखो यत्न ॥ ३६ ॥ रतन छाड़ कङ्कर कुन गहे, तज हस्ती रासभ कुन लहे । कल्प वृक्ष किम छांडा जाय, कोन धतूरा गहें सदभाय ॥ ३४ ॥ तज अमृत विष पिवें कोन, को तज नगर करें बनगोन इम प्रतिबोध नागिला करें, बहुत साध संजम सुं तरें ॥ ३५ ॥ ते तुम याद करो क्युं नाहि, तस्या साध बहु संजम माहि । भरत सगर चारित्र ले तरा, सीझ प्रत्येक बुद्ध जे खरा ॥ ३६ ॥ मृगा पुत्र अरु गज शुकुमाल, एसब सीझे संजम पाल मे [illegible] कुन मेघ कुमार, धन्ना सालभद्र अण-गार ॥ ३७ ॥ एवं घणा साध जे भया चारित्र ले शिवपंथे गया । तुम क्युं कायर हो निरधार, इम प्रतिबोध कस्यो जब नार ॥ ३८ ॥ भावदेव संजम थिर कियो, चारित्र पाल देवगत लियो । नार नागिला पाली क्रिया, [illegible] अवतारी त्रिया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ए ॥ संजम ले चूको मत कोय, मानव नव फिर नाही होय । आपा समऊ क्रिया तप करें. सुद्ध चेतना कारज सरें ॥ ४० ॥ (दोहा) नावदेव को जीव जो आऊ सागर सात । थित पाली चवियो जिहां ते सब कहुं बिख्यात ॥ ४१ ॥ महा बिदेह जु क्षेत्र है सोने अति बिस्तार । वीत सोक पुर अति नला बिचरें वहु अणगार ॥ ४२ ॥ पदम रथ तिहां राजवी करें राज अनिराम । पटराणी सोने नली बनमाला ते नाम ॥ ४३ ॥ बनमाला प्रसव्यो [illegible] पुत्र एक सुकमाल । शिवकुमार नामे हुउं योवन [illegible] रसाल ॥ ४४ ॥ स्त्री परणी तव पांचसें सुख बिलसें आवास । इकदिन वेठा गोखड़े जोवे [illegible] बिलास ॥ ४५ ॥ (चौपाइ) तिन अवसर [illegible] मुनिराय, धर्मघोष साधू सुखदाय । बिचरें [illegible] गोखके पास, डुर्बल देह क्षीण है मास ॥ ४६ [illegible] मुनिराय, आवी बांद्यो सीस [illegible] कर जोड़, एता कष्ट करो [illegible] ॥ ४७ ॥ मुनि बोलें तव बचन प्रमान करो निमित्त धर्मको जान । कुमर कहें मुऊ धर्म बताव, मै नि करों धर्म सुन नाव ॥ ४७ ॥ साधू

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहें सुनो मुझ बात. मेरे गुरु आचार्य विख्यात । धर्म बतावेंगे गुरुदेव, सुनके कुमर चलें ततखेव ॥ ४९ आय वन्दना गुरुको किया, धर्मदेशना गुरु तब दिया । सुन्यो धर्म जब कुमर सुजान, हुवो विरक्त धर्म चित आन ॥ ५० ॥ निज मन्दिर आए तत काल, सुन्दर यौवन रुप रसाल । मात पितासो कहि समुझाय, धर्म ध्यान मेरे मनभाय ॥ ५१ ॥ मात पिता जब आज्ञा दइ, श्री गुरु पासे दिक्षा लइ । वार बरस संयम आदरें, छठ पारणे आंबिल करें ॥ ५२ ॥ चारित्र सुद्ध पालके मुउं, विद्युन्माली देव तव हुउं । थित पायो पल्योपमचार, श्रोता सुनो बात बिस्तार ॥ ५३ ॥ देव आउषो पूरो कियो कहुं कथा जनम जिहां लियो । राजगृही नगरी गुणषाण, ऋषभ दत्त हें सेठ सुजान ॥ ५४ ॥ ताकी त्रिया धारणी नाम, धर्यो गर्भ सोभे अभिराम ते सुर आयो उदर मझार, सूता सुख सज्या निर धार ॥ ५५ ॥ सुपनामे जम्बू तरु देख, उठी जागि नेना अनमेष । धर्म ध्यानसुं रैण बिताय, आवी पियकुं कहि समुझाय ॥ ५६ ॥ ऋषभ दत्तको हरष अपार, प्रसव्यो पुत्र धारणी नार । सुपन देख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्बू तरु सार, नाम दियो तस जम्बू कुमार ॥ ५७ ॥ जनी जांतसुं उछव कियो, बहुत दान याचक ने दियो । अनुक्रम बांधे कुमर सुजान यौवनवंत जयो गुणखान ॥ ५८ ॥ पिता देख बालक को रूप, ए सुत सुन्दर अधिक अनूप । कन्या आठ सोधके लियो, जम्बूको विवाह थापियो ॥ ५९ ॥ तिन अवसर बाहर आराम, समोसर्या सुधर्मा स्वाम । जम्बू वन्दन आया तवें, धर्मदेसना सुनियो जवें ॥ ६० ॥ सुन्यो धर्म सुधर्मा पास मन बैरागें जए उदास , नगर माहि आवें तेवार अकस मात इक बुर्ज मझार ॥ ६१ ॥ गोलो एक लोहको टूट, पड्यो कुमरके सनमुख बूट । ऋषभदत्त सुत अचरिज देख, हुर्ज चित्त वैराग विसेष ६२ ॥ (दोहा) इह संसार असार है सार एक जिन नाम । फिर पाछे आए तिहां जिहां सुधर्मा स्वाम ॥ ६३ ॥ बारें व्रत धारण किया स्वामि सुधर्मा पास । अजि वन्दन करि आवियो जम्बू निज आवास ॥ ६४ ॥ मात पितासुं वीनवें अनुमत दीजें आज । संयम मारग आदरुं करुं धर्म को काज ॥ ६५ ॥ मात कहें सुन बछ तूं व्याह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करो इङ्कशार । मनोरथ पूरें माहरी, चुपकर रहे कुमार ॥ ६६ ॥ मात पिता जान्यो तवे, करें ठ्याह संकान्त । पुत्रीको देवें नहीं, कुमर उदासी जान ॥ ६७ ॥ तद कन्या आठें मिली, कहें बात तजि लाज । ठ्याहें जम्बू मुझे. तो सरिहे सब काज ॥ ६८ ॥ नहि तो जम्बू साथमे, व्रत धारो निरधार । मात पिता सब सांभली, कन्या आठ विचार ॥ ६९ ॥ कन्या आठें ठ्याहिया, जम्बू सों कर जोड़ । दाहेज दिया घणा, दर्व निवाणुं कोड़ ७० ॥ आठें कन्या ठ्याहके, जम्बू आए गेह । रैन समे निज महलमे, आठें करती नेह ॥ ७१ तब जम्बू तिरया प्रतें, कहें बात समुझाइ । मत भूलो संसारमे, करो ध्यान चितलाई ॥ ७२ ॥ इह संसार असार है, जैसें संझा रङ्ग । छिण इकमे खिर जायगा, मतकरो इनको सङ्ग ॥ ७३ ॥ तरुवर वृक्ष सुहावनो, बैठे पंछी आय । रैन समे वासा करें प्रातसमे उड़ि जाय ॥ ७४ ॥ इह सुख जानो कारिमा, बादल कों आवास । फिरतें बार न लागि हैं, झुठा नेह विलास ॥ ७५ ॥ (चौपाइ) तब ही राजगृही के पास, झील पश्चिमे वसते वास ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रजब नामे चोर सिरदार, परिकर जहां पांचसें सार ॥ ७६ ॥ ते सुनियो जम्बूकी बात, द्रर्व निवाण कोड़ि बिख्यात । व्याह करी जम्बू घे आय, प्रजव चोर तिहां तब धाय ॥ ७७ ॥ प्रजव चोर पांचसें सर्व, कोड़ि निवाणं बांधे द्रर्व । तब ते देखे जम्बू तिहां, बांधे चोर गांठड़ी जिहां ॥ ७८ जम्बू मनसें करें बिचार, लोगनमें अपजस सिर धार । जब सब द्रर्व चोर ले गया, तब ते दिक्षा को मन भया ॥ ७९ ॥ इम जानि सुमिरें नवकार सर्वे चोर थंभ्या तेबार । तद प्रजवो जाहिर हो कहे, जम्बू कुमार विद्या बहु लहें ॥ ८० ॥ थंभ नि विद्या मोकों देय, अनेक बिद्या मुजसें लेय कहें जम्बू प्रजव सुन बात, बिद्या धन मुज कोन सुहात ॥ ८१ ॥ काम न आवे मेरे कोय, प्रत आवरो प्रात जब होय । क्या दुख तुजको प्रजवो कहें, स्त्री आठ तेरे सङ्ग रहें ॥ ८२ ॥ एता धन दे कर तूं भोग, मतछोड़े पाये संजोग । तब जम्बु बोले करि ज्ञान, जग सुख है मधु बिन्दु समान ८३ ॥ प्रजव कहें क्या है मधु बिन्द, इसकूं कहो धारणी नन्द । कहें जम्बु मधु बिन्दु कसान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जग वन मे नरजीव निधान ॥ ७४ ॥ काल गयन्द जनम है कूप, अजगर सही नरकको रूप । सर्प कषाय चार है जान, बिषिया सुख मधु बिन्दु समान ॥ ७५ ॥ बड़ तरु है आऊषा ऐन, स्वाम स्वेत उंदर दिन रैन । मधुमाषी परिवारे घने एता दुख नर सुख करि गिने ॥ ७६ ॥ बिद्याधर गुरु धर्म बिमान, इह संजोग मिलाहे आन नहि नीसरिये जम्बु कही, प्रभव कहे निकलिये सही ॥ ७७ ॥ (दोहा) प्रभव कहे जम्बु प्रते सुनो बचन तुम एक । नाता तोड़ो आठसुं, ऐसो कहा बिबेक ॥ ७८ ॥ अठार नाता जम्बु कहे मथुरा नगरी गाम । तिहां एक बेस्या बसे कुबेरसेना नाम ॥ ७९ ॥ तिन पुत्र अरु पुत्रिका जोड़े जनिया माय । सन्दुकमे दोऊ धस्या, पेइ दिया बहाय ॥ ८० ॥ ते सिन्दुक सोरीपुरे आये तटके तीर । न्हावेहे दो वाणिया, पेइ देखी नीर ८१ ॥ ततखिण पेइ खोलियो, निकले दोय सरुप इक बालक इक बालिका, सुन्दर रूप अनूप ॥ ८२ ॥ एक महाजन पुत्रको, लीन्हा अपने पास दूजा वाणिया बालिका, राखी निज आवास

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९३ ॥ अनुक्रमे दोय बाधिया, हूवे योवन वन्त माहो माहे व्याहिया, ऐसो मिलियो तन्त ॥ ९४ चौपाइ) इकदिन रमते पासा सार, दीठी मुंद्री नाम निहार । कुवेरदत्त बालक को नाम, कुवेर दत्ता पुत्रिका ताम ॥ ९५ ॥ भ्रात बहिन आपसमे जान, पूछे मात पितासों आन । तब कहि मात पिता सब बात, सुन कुवेरदत्ता अकुलात ॥ ९६ कुवेरदत्ता दिक्षा लिया, दुद्धर किरिया तप बहु किया । तप जप करतां उपजा ज्ञान, सब बिरतंत भ्रातको जान ॥ ९७ ॥ कुवेरदत्त छोड़ घरवास मथुरा नगर गयो व्यापार । तिहां एक वेस्याको धाम, कुवेरसेना ताको नाम ॥ ९८ ॥ रूप देख मोह्यो ततखेव, कुवेरदत्त जाने नहि भेव । निज मातासुं सङ्गम कीं, तिहां पुत्र एक अवतरे ॥ ९९ इह सब कुवेरदत्ता जान, शिरधुनि कहती है अज्ञान । हाहा विषै सुख ऐसा होय, करै अनर्थ पाप नहि जोय ॥ १०० ॥ तो मैं जा प्रतिबोधुं सही आइ मथुरा माके रही । साधवी कहें वेस्यासुं बात, हमकुं जगां देहु बिख्यात ॥ १०१ ॥ दियो जगां वेस्या निजगेह, रही साधवी निर्मल देह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सबते पुत्र पालने रहें, तिनको साधवी ऐसा कहें २ ॥ मत रोवे तुं मेरा भ्रात, हम तुम जनमे एकी मात । इह नाता तुं भाइ भया, निज जननी का बेटा थया ॥ ३ ॥ दूजा नाता गुरुणी कहें, कहा पुत्र तूं रोता रहें । कुबेरदत्त जु मेरा धनी, इस नाते तुझ बेटा गिनी ॥ ४ ॥ तीजा नाते देवर जान, मत रोवें चुप रहो अयान । मेरे पतिका तुं हैं भ्रात, एसब बात कही विख्यात ॥ ५ ॥ चौथे नाते सुनो विचार, लगें भतीजा तुं निरधार । मत रोवें भाइ सुल आज, विषिया सुखमे होय अकाज ६ ॥ हे चाचा मत रोवें आप, माका पति सो मेरे बाप । तिसका तुं हैं भाइ सही, पञ्चम नाता चाचा कही ॥ ७ ॥ हे पोता रोता चुप रहो, सोक पुत्रका बेटा कहो । ए खटनाते पोता भया, ए नाता बालकसुं थया ॥ ८ ॥ खटनाता भाइसो कहें कुबेरदत्त भ्रात मुझ रहें । मुझ तुझ माता एकी भ्रात, तातें तूं भाइ विख्यात ॥ ९ ॥ दूजे नाते तुं हैं तात, मेरी माका पति विख्यात । हे दादा सुन मेरी बात, पिता हमारा तिसका तात ॥ १० तुंतो है मेरा भरतार, मेतो परणी तेरा लार । हे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेटा सुन मेरी बात, मेरी सौतिनका हैं जात ॥ ११
तैं मेरा सुसरा बिख्यात, निज देवरका तू हैं तात
ए षटनाता गुरुणी कही, कुबेरदत्तसं लागी सही
१२ ॥ खटनाता वेस्यासुं कहें, तूं तो मेरी माता रहें
मुऊं जनी तातें तूं मात, कुबेरदत्ता कहती बात
१३ ॥ दूजे नाते दादी लगी, मेरे तातकी माता
सगी । तीजे नाते चाची जान, निज चाइकी बहू
निदान ॥ १४ ॥ चौथे नाते मेरी बहू, कुबेरदत्ता
कहती सहू । तूं सौतिन सुतकी नारजा, तातें
बहू कही आरजा ॥ १५ ॥ पांचे नाते सासू कही
मेर पतिकी माता सही । छठे नाते सौतिन लगी
मेरे पतकी पतनी सगी ॥ १६ ॥ षटनाता माता
सुं करी, वेस्या सुनके कोपी खरी । ए गुरणी
ऐसी किम लवै, तव पेइकी कहती सवे ॥ १७
पेइकी सव जानी बात, बेस्या मनमे बहुत लजात
बैराग पामी दिक्षा लिया, तव बेस्याने बहु तप
किया ॥ १८ ॥ थितपूरी कर देवत हुउ, कहें
जम्बू प्रभव तुम जुउ । ऐसा नाता है संसार
सुद्ध चेतना उतरें पार ॥ १९ ॥ (दोहा) प्रभव
कहें जम्बू प्रतें पुत्र होय तुम एक । तद्र तुम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीक्षा लिनियो सुन गति कर्म विवेक ॥ २० ॥
कहें जम्बु प्रभवा सुनो कोन करें गति कर्म ।
आप किया फल पाइये पाप पुन्य अरु धर्म ॥ २१
दृष्टान्त कहो गति कर्मकी प्रभव सुनो चितलाय
महेस्वर इस ठग्री बसें पिता कह्यो समुझाय
२२ ॥ मरती बेला पुत्रको बात कही जब तात
मम सराध आवें जब भैंसा करियो घात ॥ २३
इक भैंसा मारी करी सराध कीजियो मुझ ।
निन्दा हमे पहुंचे सही बचन कहा मे तुझ ॥
२४ ॥ (चोपाइ) आर्तध्यान से मुउं तात, हूवा
भैंसा सुनियो बात । मात मरीने कुत्ती थइ, अपने
घरमुं कहूं न गइ ॥ २५ ॥ महेस्वर दसकी है नार
भोग भोगवें सङ्ग जार । देख महेस्वर कियो कषाय
जार पुरुषको मार्‍यो आय ॥ २६ ॥ ते पुरुष स्त्री
ध्याने मर्‍यो, उसही स्त्रीके सुत थो तर्‍यो । तात
मात मिल करते प्यार, आयो भाद्र पिताको वार
२७ ॥ तेहिज भैंसा मारी करी, पुत्र गोद से नहचय
धरी । माका जीव कूतरी थइ, चावें हाड़ भैंसाका
बइ ॥ २८ ॥ तिन ओसर आहार के काज, आए
तिहां एक मुनिराज । बिपरित बात देखिके जबें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाछा फिरा साधजी तबे ॥ २९ ॥ आय महेस्वर साधू पास, पूछे मुनिसौं करि अरदास । पाछा फिरा साधजी तुमे, कारन कौन बतावो हमे ॥ ३० हंसे काहे प्रभु आय बिचार, सो हमेको कहिये निरधार । साध कहैं संसार विचित्र, हंसे देख हम आज चरित्र ॥ ३१ ॥ लाल हुने वैरी प्रतिपाल इह मैंषका है तूं बाल । हणियो जिसकुं सो है तात, कहै साधजी औसी बात ॥ ३२ ॥ पोखो वैरीको निरधार, उह तेरी पतनीका जार । जो हुवषा तेरी तिया साथ, तिसे हणो तुं अपने हाथ ६३ ॥ इह कुत्ती तेरी है मात, हंसे देखके औसी बात । इह वृत्तान्त कुत्ती जब सुनी, जो इह जानी ज्ञानी मुनी ॥ ३४ ॥ तब उपजो कुत्तीको ज्ञान मनमे जान्यो गड़ी निधान । पग इसारा हुलको कियो, पुत्र आयके धन सब लियो ॥ ३५ ॥ महे स्वर को आइ प्रतीत, पाय वैराग्य धरमकी रीत वैरागैं लिह्वा सब धर्म, गति पाइ छूटी सब कर्म ३६ ॥ इह जगकी गति प्रजबो देख, पिता पुत्रको कारण पेख। औसो है गति कर्म बिचार, बुद्ध जोजना पावे पार ॥ ३७ ॥ (दोहा) सुनके प्रभवो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह कथा, चुप हो रहें निदान। जम्बूकी पहिली त्रिया, समुद्रश्री गुणखान ॥ ३८ ॥ ते बोली स्वामी सुनो, एक हमारा बेन। हमको तजि दिक्षा ग्रहो, सोचोगे दिन रैन ॥ ३९ ॥ जैसे बग पामर रहें, ते पछतायो आप। तैसें तुम पछतायोगे, पाछें करिहो ताप ॥ ४० ॥ तब जम्बू स्वामी कहें, कहो प्रिया तुम बात। कैसें वग पछताइयो, कथा कहो बिख्यात ॥ ४१ ॥ पहिली त्रिया कहें कथा, स्वामी सुन चितलाय। मारवाड़ के देशमे, पामर जाट कहाय ॥ ४२ ॥ (चौपाइ) इकदिन ते वग पामर जाट, गये मालवा देशके बाट। अनुक्रम आये मालव जिहां, गये सासरे बैठें तिहां ॥ ४३ ॥ सासू जिमन तेड्यो घरें, मालपुया ले आगुं धरें जिमी पामर मिठा जया, आज चिज देखा मै नया ४४ ॥ ऐसा जिमन जिमे नही, अजब वस्तु देखा नहि कहीं। तब सासूसें पूछें बात, ए कुन वस्तु कहो मुझ मात ॥ ४५ ॥ गुड़ गेहुं के है ए चीज, वग माङ्गे हमकुं द्यो बीज। मै बोऊं अपने घर जाय तो इह बस्तु हमेसा खाय ॥ ४६ ॥ मालपुवा खाउं मै सदा, कहे सासकुं पामर तदा। गेहूं ऊख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सासने दिया, दोनो बीज जाटने लिया ॥ ४७ ॥ वग पामर आये निज गेह, दियो बीज सुतको करि नेह। कहें जाट सुतसुं करि हेत, ए बीया तुम बोउ खेत ॥ ४८ ॥ बेटा कहे सुनो तुम बात कोळूं नया खेतमे तात। दिन दशका तुम देरी करो, ए बीया ले घरमे धरो ॥ ४९ ॥ सुनी बचन सुतको जब तात, कोप करी बोलें बिख्यात। कोळू हमने खाया सदा, मीठा बस्तु न खाया कदा ॥ ५० ॥ अरे मुर्ख जानो नहि तमे, मालपुया खाना है हमे। तिसतें कोळूं काटो जाय, ए बीया लेके तूं बाय ॥ ५१ ॥ तद कोळूंको दूरे किया, गुड़की बीज बोयके दिया। उह धरती बालुकी रही पानी बिन कबु उपजे नही ॥ ५२ ॥ (दोहा) दिन २ कूवा खोदतें, रैन पवन सञ्चाल। बालू कूयेमे नरा, सूक गया ततकाल ॥ ५३ ॥ बिन पानी उपजा नही, जली गयो ते बीज। गेहूं ऊख न नीपजा, दोनु खोया बीज ॥ ५४ ॥ गुड़ कोळूं दोनु गया, जाट महा पछताय। तैसें तुम सुन मुक्तिका, मीठा सुख चितलाय ॥ ५५ ॥ तिसको लालच तुम करो, जगका सुख बिष भोग। हमको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तजि दिक्षा ग्रह्यो, नही रहे तुम जोम ॥ ५६ ॥ संयम लेतेहो सही, सुख संसारी त्याग। पीछे मन थिर ना रहे, बिसर जाय बैराग ॥ ५७ ॥ तद मुक्ति भी नहि मिले, जग सुख नाही होय। फिर पाछे पछतावोगे, दोनो सुखको खोय ॥ ५८ ॥ जैसे वग पछताइया, तिम करते तुम काम। सोचोगे तुम आपको, नही रहे चित ठाम ॥ ५९ ॥ (चौपाइ जम्बू कहे बनिता सुन बात, बिषयाबिष मुझ नाहि सुहात। जो पछतावेगा नर कोय, वायसनि परे लोभी होय ॥ ६० ॥ हूं ऐसा लालच नहि करुं बिषिया सुखमे हूं ना परूं। पियसुं कामणि पूछे तथा, कुन ए बायस कहियें कथा ॥ ६१ ॥ जम्बू कहें प्रिया सुन बात, भरुयच नाम नगर बिख्यात नरमदा नदी बहती जिहां, करी कलेवर मूवा तिहां ॥ ६२ ॥ बहु पंछी तस आवें जाय, आमिष भक्ष करे मनलाय। अधोद्वार गजको है जिहां कउवा एक बिचरै तिहां ॥ ६३ ॥ सब पंछी मूरख सिरताज, आवेहैं उड़ जावें भाज। मै नही जाऊं इतथी कदा, भक्षन करि हुं बैठा सदा ॥ ६४ ॥ इहां आहार है बिस्तार, ऐसा जान कलेवर धार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलेवर खाता २ जवें, गजपेट जु पेठा तवें ॥ ६५
कोइ दिन पिछे गरमी नया, गजको कलेवर सूखी
गया। धूप पड़ा सकुचाते द्वार, भितर काग रहे
निरधार॥ ६६ ॥ इकदिन मेह नया बिस्तार, नदी
पूर आइ तिनवार। वहे कलैवर गजका जवें, वह
आया सागरमे तवें ॥ ६७ ॥ पानीकी सरदी बहु
थया, तव उह द्वार मोकला नया। तवते काग
निकला सही, चारतरफ देखे जल रही ॥ ६८ ॥
बैठनको जागा नहि कहीं, उड़ २ बैठे उहां फिर-
तहीं। कउवा वांही रुबा सही, बायसके सम
हमतो नही ॥ ६९ ॥ तुम सरीर पर मुझ नहि
लोभ, जो होवे अति सुन्दर सोभ। नहि रुवुं भव
सागर माहि, चेतनता सुध शिवपद यांहि ॥ ७०
दोहा) पदम श्री दूजी प्रिया, ते बोली सुन स्वाम
हम ऐसी स्त्री पायके, लोभ करो शिव वाम ॥ ७१
पिन तुम बानर के तरे, पछतावोगे आप। लोभ
बहुत नहि किजिये, फिरके पश्चाताप ॥ ७२ ॥
जम्बू कहें कहो प्रिया, ते कुन बांदर होय। कैसे
ते पछताइया, कथा कहो तुम सोय ॥ ७३ ॥ बनिता
जम्बूको कहे, कथा सुनो चितलाय, बांदरकी मैं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहुं सवें, श्रोता सुन सुखदाय ॥ ७४ ॥ (चौपाइ
इक वनमे बांदर बांदरी, जुदा रहे नहि एकेघड़ी
स्त्री भरतार हेत अति धरें, इकदिन बनमे फिरता
फिरें ॥ ७५ ॥ तिहां इक द्रहमे निर्मल नीर
बांदर बांदरी बैठा तीर । करे विचार बांदरा
तिहां, स्नान करिये कुन्ड है जिहां ॥ ७६ ॥ तद
वृक्ष ऊपर चढ़ियो धाय, दोनु द्रहमे कूदे जाय
गिरत प्रमाने मानव भया, बन्दर रूप सबि मिट
गया ॥ ७७ ॥ बन्दर कहे कूदिये फेर, देवत हूजें
अवकी बेर । बांदरी कहे सुनो मुझ पीव, बहुत
लोभ नहि कीजें जीव ॥ ७८ ॥ आपन पशु तें
मानव भया, एताहिमे सुख बहु थया। अव लालच
मत करो सुजान, नहि मान्यो बांदर अज्ञान ॥ ७९
द्रहमे फेर कूदियो जवें, बांदर रूप भया ते तवें
बांदरी फिर नहि कूदी जिहां, नारी रूप रही ते
तिहां ॥ ८० ॥ एते मे जित शत्रु राय, शिकार हेत
तिहां ते आय । त्रिया बांदरी अद्भुत रूप ते देखी
जित शत्रु नृप ॥ ८१ ॥ रूप देख नृप सङ्ग लिया
घर आए पटराणी किया । इकदिन राजा राणी
तिहां, बैठें जाय गोख है जिहां ॥ ८२ ॥ उह बन्दर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकाकी थया, बांधी पुरुष पकड़ ले गया । नाच सिखाया बांधी जवें, सीखा नाचन बन्दर तवें ७३ ॥ बन्दर बांधी लाया तिहां, राजा राणी बैठा जिहां । लगा नचावन बांधी जवें, निज तिय बन्दर देखी तवें ॥ ७४ ॥ राणी बन्दर चिन्हा सही, रोनै लगा बन्दर रही । राणी बन्दर जाषा कहें, अब पछताया कछु नहि लहें ॥ ७५ ॥ तैं नहि माना मेरी बात, किया लोज तैं अति विख्यात । ताते तूंतो बन्दर रहा, ते नहि माना मेरा कहा ॥ ७६ मेरा तेरा जया बिजोग, मत रोवें नहि कीजें सोच तव बांदर सुनके चुप रहा, जो राणीने बातें कहा ७७ ॥ (दोहा) ऐसा स्वामी मतकरो, हमको तजके लोज । चाहो सुख तुम मुक्तिका, कैसे पावो सोज ॥ ७८ ॥ जिम बांदर पछतावते, तैसा करते आप । अधिक लोज नहि कीजिये, होवे पछातापा ७९ ॥ तव तियको जम्बू कहे, सुनो बचन चित-लाय । कवाड़ी जैसा हूं नही, मूर्ख बिवेक रहाय ८० ॥ कामिनी जम्बूने कहे, कौन कवाड़ी जीव मूर्खतातें किम कियो, ते तुम जाषो पीव ॥ ८१ चौपाइ) जम्बू कहें एक बन माहि, कठियारो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इक आयो नांहि । लक्कड़ लेके कोयला करें, अग्नि तपावें बहुविध परें ॥ ९२ ॥ ऋतु गरमी की लागे प्यास, सूखे कण्ठ नीर बिन तास । निज भांड़े का पानी पिया, ते बरतनको खाली किया ॥ ९३ प्यास बहुत लागी फिर तास, पानी रञ्चक नहि है पास । सोधें बनमे पानी नही, लागे प्यास मिले नहि कहीं ॥ ९४ ॥ बहुत प्याससुं निद्रा लियो, दरखत नीचे जा सूतियो । सूता सुपना देखे तिहां, बहुत नीद लीन्हा है जिहां ॥ ९५ ॥ कूवा तलाव नदीको नीर, तेमे पीधा आप शरीर । जब जागा फिर प्यासा रहा, उठके ढूंढे पानी कहां ९६ ॥ तब देखा इक गढ़ है तिहां, चहला बहुत भराहै जिहां । सीक घासका लियो उठाय, चहला मे तब दियो डुबाय ॥ ९७ ॥ मुखमे आप निचोड़े घास, नहि गइ फिर बाकी प्यास । तैसा मै न करुं इह काम, जोग जागिहों मै शिवधाम ॥ ९८ ॥ तुमरी जोग न मनमे आन, जैसे चहला बून्द समान । सो मुझको नहि आवें दाय, थोड़ा सुख दुख बहुत कहाय ॥ ९९ ॥ ऐसा बचन सुनी जब कान, दूजी त्रिय चुप रहे निदान । जम्बू स्वामी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धीरजवन्त, आगे श्रोता सुन बिरतन्त ॥ २०० दोहा) अब तीजी तिय इम कहे, पदम सेना जु नाम । स्वामी सअम मति धरो, सअम दुक्कड़ काय ॥ १ ॥ जो ह्येगे पछतावगे, नृपकी राणी जेम । तेनो दुख पायो घणो, तुम पावोगे तेम ॥ २ ॥ तब जम्बू स्वामी कहें, ललना कहिये बात राणी किम दुख पाइया, ते तुम कहो विख्यात ३ ॥ कहें पदम सेना तवे, स्वामी सुन चितलाय राणीकी मैं कहुं कथा, जे दुख पायो काय ॥ ४ कामिन पियसुं भाषती, साच बचन हिय धार चेतनना सुध होयके, श्रोता सुनो विचार ॥ ५ चौपाइ) राजगृही नगरी बिस्तार, तिहां बसे देवदत्त सुनार । तिनके दर्ब बहुत है पास, घरमे एक पुत्र है तास ॥ ६ ॥ इक सुनारकी पुत्री आन कियो बिबाह पुत्रको जान । स्त्री भरतार बहुत है प्यार, सुख बिलसे नित तेह सुनार ॥ ७ ॥ अन्य पुरुषसो लुबधी त्रिया, देखी सुसरे सुतकी प्रिया सुतसुं जाय हकीकत कही, तेरी त्रिया सती तो नही ॥ ८ ॥ पुत्र न माने एको बात, मेरी त्रिया सती बिख्यात । तब ते बूढ़ा चुप हो रहा, सुनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बात जे सुतने कहा ॥ ९ ॥ इकदिन तिया सङ्ग, ले जार, बाड़ीमे सूती निरधार। तबते सुसरे देखा सहू, सूती जार सङ्ग ले बहू ॥ १० ॥ सुसर देख निद्रावस नार, लियो खोलि नेपुर निरधार। पग नेपुर सुसरा ले चला, उठी त्रिया जानी सब कला ११ ॥ सुसर कहेगा सूतसुं जाय, मैतो पहिले कहुं समुझाय। परपुरुष को बिदा कर दिया, सूती जाय जिहां निज पिया ॥ १२ ॥ घड़ी इकमे पिउ को जगाय, कहने लागी बात बनाय। पग नेपुर सुसरा ले गया, अनघट काम आज ए भया ॥ १३ प्रात कहेगा तुमसुं जबें, दोस मुझीको देगा तबें खबरदार तुम रहियो प्रात, मत मानो जो भाषे तात ॥ १४ ॥ प्रात भया दिनकर परकाश, सुसर आय बेटाके पास। सुनो पुत्र तुम बहुकी बात जार सङ्गले सूती रात ॥ १५ ॥ पग नेपुर मै खोली लिया, तुझे दिखावन को मै किया। कहे पुत्र बूढा सुन बात, तेरी अकल कहां गइ तात ॥ १६ ॥ क्या कलङ्क देता तैं आज, मेरी बहू सती सिर ताज। जब तैं नेपुर लिया उतार, तब मै सूताथा निरधार ॥ १७ ॥ धिक्कार तुझे है आया तिहां, बेटा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहु सैनमे जिहां। लाज न आइ तुझको आज
जड़ सुसराकी कीन्ही लाज ॥ १८ ॥ सती लाज
कर बोली नही, तुझको लाज न आइ कहीं। तैं
तो झूठा ऐसी कहे, मेरी बहुतो साची रहे ॥ १९
बूढा कहि हकीकत सबें, बेटा तो नहि मानी तबें
झूटा हुया बुढा तब सही, सुध चेतना बाली कही
२० ॥ (दोहा) बहु कहे सुसरा मुझे, दीन्हा
आज कलङ्क। करुं धीज परतीतको, तो मै रहुं
निसङ्क ॥ २१ ॥ साच झूठ निर्णय करुं, करी
प्रतिज्ञा आज। जब कलङ्क मुझ मेटिहैं, तब रहसी
मुझ लाज ॥ २२ ॥ नगर माहि इक यक्षको, देव
लहें अभिराम। मूरत सोजे यक्षकी, ते जाने सब
गाम ॥ २३ ॥ झूठा निकले पग विचें, दाब रखे ते
यक्ष। साचा ततखिण नीकलें, सब देखे परतक्ष
२४ ॥ साच झूठ इम जानिये, यक्षदेव परताप।
चेतनता सुध होयके, श्रोता सुनियो बात ॥ २५
चौपाइ) धीज करनको चाली बहु, मिला खलक
देखनको सहु। भीड़ भइ आये सब लोग, बहू
जारसे कियो संजोग ॥ २६ ॥ तबते बहू जारसुं
कही, एक फन्द कीजो तुम सही। स्नान करीनें

For Private and Personal Use Only

जाउं जवें, गहिला होके बूजो तवें ॥ २५ ॥ लोग देखतां अड़ियो मुझे, एती बात कही मे तुझे, तव उनने अैसाही किया, सहूलोग देखत बू लिया २७ ॥ नारी गइ यक्षके पास, जोड़ी हाथ करे अरदास । पहिले गहिले बूवा अङ्ग, अवर पुरुष नहि किया प्रसङ्ग ॥ २९ ॥ जो मै झूठ कहूं एबात, तो तुम दाव रखो विख्यात । नहितो मुझने दीजो छोड़, मै तुम आगे कहि करजोड़ ॥ ३० ॥ अैसी बात वधूने कही, यक्ष चरणसुं निकली सही । यक्ष विमास्या साची बात, दोय पुरुष कहती विख्यात ॥ ३१ ॥ सुनी बात नारीकी जवें, यक्ष देवता छोड़ी तवें । साची जइ दोष सब गया, तव ते हुआ झूठा सदा ॥ ३२ ॥ उस दिनसो बुढा दिन रात, नीद न आवे अचरिज बात । नगरीमे जाने सबकोय, देवदत्तको नीद न होय ॥ ३३ ॥ सुना सुपने अैसा वेन, देवदत्त सोवें नहि रैन । राजा जी जव किया बिचार, बड़े कामका जानि सुनार ३४ ॥ जनानी ड्योढ़ी है जो खास, चौकीदार करुं मे तास । एतो जागे सारी रात, नृपति राख्यो ते विख्यात ॥ ३५ ॥ देवदत्त तव रहता तिहां, पट

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राणी की ड्योढ़ी जिहां । आगे बात बहुत विस्तार श्रोता सुनियो श्रवण मझार ॥ ३६ ॥ पटरानी राजाकी तिहां, फीलवानसुं सुवधी जिहां । हाथी सजकर आया रैन, पटरानीको कीन्हा सैन । राणी गोषें बैठी आय, हाथी अपना सूण्ड उठाय ३७ ॥ पटरानीको लिया उतार, ते देखे देवदत्त सुनार । महावत राणी करि जोग, राणी गोख न देखे लोग ॥ ३८ ॥ बुढा देख विचारन लगा, आज सकल चिन्ता मुझ जगा । जो राजाके घर ए बात, मुझ गरीवकी कौन बिसात ॥ ४० ॥ दोहा) चिन्ता मिटी सुनारकी, आइ निद्राघोर प्रात समे नृप देखियो, पतो सूता जोर ॥ ४१ ॥ राजा पूछें तेहसुं, साची कहियो मुझ । आगे नींद न आवती, क्युं आइ अब तुझ ॥ ४२ ॥ तब सुनार कहि रायसुं, रैनीका संजोग । हस्ती राणी आनियो, कियो महावत जोग ॥ ४३ ॥ राय हुकम तवही कियो, तिनोको ले जाय । वै जार गिर पर वतसुं, दीजो सही गिराय ॥ ४४ ॥ दया करी सब लोकनें, नृपसुं दियो छुड़ाय । फीलमानको काढियो, राणी सङ्ग लगाय ॥ ४५ ॥ (चौपाइ)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राणी महावत सङ्ग जाय, देश निकाला दीया राय
जमते२ आये किहां, पुर बाहर देवल है जिहां
४६ ॥ सूना देवल तिहां न कोय, जिहां आय
सूताहै दोय। ऐसेमे राजाका चोर, चोरी कर
आया ते ठोर ॥ ४७ ॥ पीछे फोज रायका जबैं
छिपा चोर देवलमे तबें। चौकिदार जु बाहर रहै
प्रात होय पकडुंगा कहे ॥ ४८ ॥ तिहां महावत
सूता सही, राणी जिहां जागती रही। आग
चांदने राणी देख, एतो नरहै रूप विशेष ॥ ४९
राणी पूछें तूं है कौन, किनकारण बैठा है मौन।
मै हूं चोर तुमीसो कहा, राके मारे मै छिप रहा
५० ॥ मुझे आदरें राणी कही, तो मै तुझे बचाउं
सही। जो तुम कहो बचन परमान, कर उपगार
बचावो जान ॥ ५१ ॥ प्रात हुवा राजाके लोग
देवल बीच आय संजोग। तस्करका राणी कर
गही, ए पति मेरा ऐसा कही ॥ ५२ ॥ ए तुम
चोर महावत जान, हम पंथी परदेशी प्राण। पकड़
महावत लाये तिहां, राजाजी बैठेथे जिहां ॥ ५३
राय दिखाया सूली तबें, जान महावत मूवा जबें
राणी चली चोरके लार, आगे जङ्गल है कन्तार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५४ ॥ नदी एक आइ जब तिहां, पार जानेको नाव न जिहां । तब तस्कर राणीको कहे, कपड़ा गहना जो तुऊ रहे ॥ ५५ ॥ ते सब दिजे मुऊे उतार, मे रख आउं तटनी पार । पिछे तुऊ ले जाउं सही, तबते राणी नागी रही ॥ ५६ ॥ (दोहा कपड़ा गहना चोरको, राणी दीया उतार । राणी तो नागी रही, चोर चला तब पार ॥ ५७ ॥ कहे चोर राणी सुनो, ए जङ्गलको जोय । यांही तूं बेठि रहो, अवर सोधियो कोय ॥ ५८ ॥ ऐसा कहके चोरटा, चला गया तब आप । नदी तीर राणी रही, करती महा बिलाप ॥ ५९ ॥ फील-वान मरती समे, देखी त्रिया चरित्र । सुभ परि-णामे ते मुवा, हूवा देव पबित्र ॥ ६० ॥ हुवा महा-वत देवता, उपजता ज्ञान बिसेष । अवधि करी आयो तवें, पिछला भव तब देख ॥ ६१ ॥ (चौपाइ राणीके प्रतिबोध न काज, तब सुर कियो वैक्रिय साज । जम्बूक रूप देवता किया, मास पिन्ड मुखमे तब लिया ॥ ६२ ॥ नदी तीर राणी है जिहां जम्बूक जाके ऊभा तिहां । एतामे इक मछली जीव, जलसुं बाहर आये सदीव ॥ ६३ ॥ गीदड़

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देख मास रख दिया, वह मछलीको लेने किया आया गिध मास लेगया, मछली तब पाणीमे गया ६४ ॥ हसी देख राणी तेवार, बोनु खोया मूर्ख गमार। गीदड़ कहे सुजग सुन बात, मे तिर्यञ्च पशुकी जात ॥ ६५ ॥ मनुष होय तिनो को खोय तुं नहि दिलमे जाने सोय। राणी कहे कौन तैं तिन ते तुम जाषो बचन नबीन ॥ ६६ ॥ कहे जम्बूक राणी सुन बात, राय महाव्रत तस्कर जात। मुझ वीतक कैसें तुं कहे, तुं क्या जाने कहां तूं रहे ६७ ॥ प्रगट कियो सुर अपना रूप, सुन्दर सोजे अधिक अनूप। कहे महाव्रतका हुं जीव, राणी लाजी आप सदीप ॥ ६८ ॥ तब सुर कहे जड़ सुन बात, तेरा दोष नहि विख्यात। एसब काम अरु मोह बिकार, तूं मत लाजें आप बिचार ॥ ६९ ॥ तब राणी प्रतिबोधी सही, सुनी बात देवत जो कही। हूइ साधवी राणी जवें, गया देव निज थानक तवें ॥ ७० ॥ स्वामी ऐसा है इह कथा तुमतो दीक्षा ल्योगे यथा। पिणपिछें पछतावो सही राणी जिम मैं तुमसो कही ॥ ७१ ॥ सुनके जम्बू ऐसा कही, ज्ञान बिना पछतावो सही। आगे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बात कहुं विस्तार, सुद्ध चेतना पावें पार ॥ ७२ ॥
दोहा) तब जम्बू तियसो कहे, सुनो बात गुणगेह
विद्युनमाली हूं नही, हार्यो विद्या जेह ॥ ७३ ॥
विद्युनविद्या खोयके, पायो दुख्ख अपार। तैसें
हूं नहि चूकिहों, तुमरे बचन लिगार ॥ ७४ ॥
कहे पद्मसेना तबें, विद्युनमाली नाम। कैसे विद्या
हारियो, से भाषो मुझ स्वाम ॥ ७५ ॥ तब जम्बू
स्वामी कहे, सुनो त्रिया तुम बात। विद्युनमाली
की कथा, सर्व कहुं विख्यात ॥ ७६ ॥ चतुराचित
दे सांभलो, मोह काम तजि आज। चेतनता सुध
होयके, कीजो अपनो काज ॥ ७७ ॥ (चौपाइ)
जम्बूद्वीप बहुत विस्तार, भरत क्षेत्र सोहे सुख
कार। तिहां इक नगर बसें सुठाम, है कुष्टपुर नाम
इक गाम ॥ ७८ ॥ तिहां बसे ब्राह्मन सुत दोय
नाम कहुं सुनियो सबकोय। इक विद्युनमाली है
नाम, पुत्र मेघरथ दूजा ताम ॥ ७९ ॥ दोनो है
विद्या धनहीन, महा दुखी दुखसो अधीन।
इकदिन पुरके बाहर गया, विद्याधरसुं मिलना
भया ॥ ८० ॥ दो मूरख विद्याधर देख, कहे बचन
तब एक विसेष। जो मानो मेरा तुम बात, तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इक बिद्या है बिख्यात ॥ ७१ ॥ जिनसुं सुख पावोगे सही, स्वामी प्रमाण जो तुम कही । तद बिद्याधर ऐसा कहें, बचन हमारे जो सर दहें ॥ ७२ ॥ करो ब्याह चन्डालिन धिया, बाहिर गाम रहो ले त्रिया तिनसुं भोग मती तुम करो, ब्रह्मचर्य षटमासी धरो ॥ ७३ ॥ मन्त्र बताउं जपियो जाय, छेमास मन्त्र सिध थाय । देवि चण्डाली परतक्ष होय तुमको बिद्या देवे सोय ॥ ७४ ॥ बिद्या प्रभाव राज तुम करो, अनेक रायकी पुत्री बरो । चण्डालीका देखी रूप, हाव भाव करती जु अनूप ॥ ७५ ॥ तुम जो चूको उसके साथ, चूको तौ बिद्या नहि हाथ ऐसा कहिके दिढ़ता किया, बिध समेत मन्तर तब दिया ॥ ७६ ॥ बिद्याधर किन्ही बहु दया बिध बतलाय ठिकाने गया । ब्राह्मण पुत्र मन्त्र तब लियो, चण्डालनिसों निसपत कियो ॥ ७७ ॥ बाहिर रहे गामके जाय, उह मन्तर जपे मनलाय इकदिन ते चण्डालिन रमे, बिद्यनमाली रातके समे ॥ ७८ ॥ रूप देखके चूक्यो जवें, बिद्या सिद्ध भइ नहि तबें । छोटा भ्रात मेघरथ जहीं, ते तो ब्रतसुं चूक्यो नहीं ॥ ७९ ॥ बिद्या सिद्ध भइ सब काज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुत मुलक का पाया राज। बहुत रायकी पुत्री वरी, उसको विद्या सिध हुइ खरी॥ ८० (दोहा नया मेघरथ तब सुखी, जम्बू कहे सुन नार। तुमरी जोग जानिया, चण्डाली निरधार॥ ८१ हूंतो चूको नहि कदा, मेघरथ परें जान। अनेक सुख है सिद्धके, ते पाउं शिवथान॥ ८२॥ विद्यन माली चूकीयो, डुख पायो विस्तार। तिम हूं भोग न जोगवी, नहि जरसुं संसार॥ ८३॥ जोग तजे संसारको, जोग करे जो कोय। ते पावे सुख सासता, नरक बास नहि होय॥ ८४॥ इह सिक्षा सुन लीजिये, तीजी त्रिया सुजान। चेतनता सुध होयके, लीजे अविचल थान॥ ८५॥ (चौपाइ चौथी कामिण बोली ताम, कनक सेना है ताको नाम। जम्बू स्वामीसुं तब कहे, हमकुं छोड़ मुक्त सुख गहे॥ ८६॥ स्वामी लोभ मती तुम करो फिर पाछ पछतावो खरो। जैसे एक खेत रखवाल ते डुख पायो बहुत बिहाल॥ ८७॥ जम्बू कहे कौन खेतिहार, बनिता जाषें जरत मझार। सुर पुर नामे नगरी जिहां. पांवर एक बसें है तिहां ८८॥ खेती करन हार हैं तेह, करे खेतको रक्षा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जह । नाज खेतका पक्का जवें, ...या माली खेत मे तवें ॥ ९९ ॥ उपर बैठ बजावे संख, करे जानवर उड़े जु पंख । इकदिन गाय भैंस ले चोर, ते तव आया खेतकि ओर ॥ ३०० ॥ संख वजावो पामर तवें, जान्यो चोर देवता जवें । कोप करी मुझ उपर देव, भाग गया तस्कर ततखेव ॥ १ पांवरें लिया चोरका माल, गाय भैंस कपड़ा संभाल अवर जगेंमे बेचा जाय, पैसा किया लोभ अधिकाय ॥ २ ॥ अधिक लोभ पांवरका रही, आज हुंनर मै पाया सही । इकदिन चोरी करके चोर आया फेर खेतके ठेर ॥ ३ ॥ पांवर संख बजाया फेर, तस्कर जाना अवकी वेर । ए रखवाला खेत का सही, पायाभेद देवता नही ॥ ४ ॥ तव पांवर को पकड़ा जाय, मार दिया सब लिया छिनाय । सबीलोक पूछें कर दया, रे पांवर तुझको क्या भया ५ ॥ तुमतो ऐसा करते काम, पांवर सम पछतावो स्वाम । कनक सेना बात इह कही, आगे श्रोता सुनियो सही ॥ (दोहा) तव जम्बू स्वामी कहे त्रिया सुनो हम बात । मुझे भोग तृस्ना नही, जैसे बांदर जात ॥ ७ ॥ कनक सेना भाषें तवें, ते कुन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्दर होय । मुझ आगल ते नाचिये, प्राणनाथ तुम जोय ॥ ८ ॥ जम्बू स्वामी तब कहें, जङ्गल वन विस्तार । बन्दर बन्दरी जोड़ ले, बसे तिहां निरधार ॥ ९ ॥ बांदर तो बूढ़ा हता, तरुण बांदरा एक । ते तो तब आयो तिहां, बूढ़ा कियो विवेक १० ॥ बन्दर तो देखी तवें, बूढ़ा गया पलाय । परबत के खूहाण मे, ते तो छिपियो जाय ॥ ११ ॥ पानीकी बहु तिस लगी, पानी मिले न कोय । चहला ले २ देहमे, लगा लपेटन सोय ॥ १२ ॥ बार २ ले कीचको, बहुत लगावे तेह । धूप लगी तव सूखीया, उलटी जलती देह ॥ १३ ॥ दुख पाया ते कर्मसुं, बांदर सम हुं नाहि । फसुं न तृस्ना कीचमे, जो दुख पावुं तांहि ॥ १४ ॥ ऐसा मूरख मै नही, कामिन सुन मुझ वैन । चेतनता सुध कीजिये, पावे अविचल चैन ॥ १५ ॥ (चौपाइ तव ते बोली पञ्चम बाम, ताको महसेना है नाम स्वामी बहुत लोच मत करो, सिद्धी सम पछतावो खरो ॥ १६ ॥ जम्बू बोलें सिद्धी कौन, किम दुख पाइ भाषो जौन । स्त्री कहे एक कोइ ग्राम, सिद्धी बुद्धी रहे सुगाम ॥ १७ ॥ दोनो त्रिया दलिद्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहें, धन पायें दुख बहुला सह । इकदिन सार्थ वाहके लोय, खाता पिता सुखिया जोय ॥ १८ तद पूछा ब्राह्मणसुं जाय, एते लोग सुखी किम थाय । हम दालीद्री क्यों कर जये, सुख सम्पति मेरे क्युं गये ॥ १९ ॥ तव द्विज बोले बचन विचार पुस्तक देख कहे निरधार । एसब लोग पूजिया देव, तुमतो देव न कीन्हा सेव ॥ २० ॥ तवते गणपत पूजन लगी, जले जावमे रहती जगी । तूठा देव जु छेहमास, कहे मागमे पूरो आस ॥ २१ ॥ बुद्धी कहती सुनियो देव, मोहर एक आप नित मेव । गणपति नित एक मोहर दइ, बुद्धीतो धन वन्ती जइ ॥ २२ ॥ सिद्धी पूछे करि मुझ दया, तुझ को दौलत कैसे जया । कहे देवता दीया मुझे पूजो देव कही मै तुझे ॥ २३ ॥ सिद्धी गइ देवता पास, पूजा करे दर्बके आस । तवें देवता तूठा सही क्या मांगे ऐसा तद कही ॥ २४ ॥ ॥ तव सिद्धी बोली ततखेव, बुद्धीसो दूना मुझ देव । मोहर दोय देवता दिया, सिद्धीतो नित तिनसुं लिया २५ ॥ हुवा दर्व सिद्धीको जवें, बुद्धी आके देखी तवें । बुद्धी पूछें सिद्धी कने, कैसे धन हुवाहै तने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२६ ॥ कहन लगी देवता दिया, जिसी देवसुं तैंने लिया। मोहर इक मांगी तैं जोय, मैंने मांगी मोहर दोय ॥ २७ ॥ हमने तुझसो दूना लइ, तव तो मै धनवन्ती भइ। बुड्डी सुनके इरषा धरी फिर गणपतकी सेवा करी ॥ २८ ॥ छठेमास प्रसन्न तव थया, मांगो तुम कीया मै दया। स्वामी तुम आगममे कही, मेरी आंख एक लो सही ॥ २९ कानी करो देवता मुझे, मेतो बात कही जब तुझे तवें देवता असा किया, बुड्डीको कानी कर दिया ३० ॥ बुड्डी आ पड़दे रही, तव सिड्डीने जाना सही। अवकी वेर दर्व बहु लियो, बुड्डीको देवत ने दियो ॥ ३१ ॥ बहुधन लाउं मैजी जाय, तव गणपतके सन्मुख आय। सेवा करी रिझाइ देव तव गणेश तूठो ततखेव ॥ ३२ ॥ क्या मांगे है तूं मुझ पास, ते तुम कहियो पूरो आस। तवते बोली दीजें देव, बुड्डीसो दूना ततखेव ॥ ३३ ॥ तवें देवता दूना दिया, दोनो आंखज अन्धी किया मोहर खोय आंखवी गया, तव सिड्डीको बहु दुख भया ॥ ३४ ॥ तैसे स्वामी करते काम, क्यौं छोड़ो हम असी बाम। दिक्षा गहो मुगतके काज, नही

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिले तुमको शिवराज ॥ ३५ ॥ जगके सुखकी योगे खोय, सिडी सम पछतावा होय। इहबात महसेना कही, चतुर लोक तुम सुनियो सही। ३६ ॥ (दोहा) अब जम्बू स्वामी कहे, सुनो पद्ममी नार। जातवन्त हयकी तरे. हूं चालुं निर धार ॥ ३७ ॥ कु राह मग चालुं नही, चालों पन्थ सुपन्थ। कौन तुरङ्गम तिय कहे, ते तुम भाषो कन्थ ३८ ॥ जम्बू कहे तिय सांभलो, अद्भुत बात अनूप संतनपुर इक नगरमे, जितसत्रु तिहां भूप ॥ ३९ नृपके एक तुरङ्ग है, जातवन्त बहु मोल। राजा हयसुं रञ्जिता, यामे तो बहु तोल ॥ ४० ॥ ते घोड़ा जिनदत्तको, दिया सिखावन चाल। हंस चाल सीख्यो जवें, कुमग दियो सब टाल ॥ ४१ ॥ (चौपाइ सीख्यो हंससु मारग चाल, सबकु पन्थको दीन्हा टाल। सुना रायका बैरी जवें, भली चाल घोड़ेका तवें ॥ ४२ ॥ जितसत्रु नृपके आवास, घोड़ा एक अमोलिक खास। मेरा सेवक औसा कोय, उह घोड़ाकुं लावे सोय ॥ ४३ ॥ तव इक चाकर बीड़ो लियो, रैनसमे जा खातर दियो। तव उह बाह खोल ले चला, घोड़ा जातवन्त है भला ॥ ४४ ॥ हयको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुपन्थ चाले नही, वहुत कुराह चलाया जहाँ । दिन उगत छोड़ाके कान, चोर चलावत अपने थान ॥ ४५ ॥ घोड़ा रहा धनीके पास, वहु सुख पाया करें बिलास । चोरोंके बस पड़ा न हंस, तैसें हम हैं उत्तम वंश ॥ ४५ ॥ अश्व समान मोक्ष मग छोड़, जगकु राहसों निज मन मोड़ । मोह चोरके बस नहि रह्यो, सत्य शील समता गुण चह्यो ४७ ॥ तुम मुझको बहु बातें कही, पन्थ कुपन्थ चलावो सही । मै मूरख नहि सुनियो नार, पड़ों न जगके जोग विकार ॥ ४८ ॥ (दोहा) जम्बूकी छठी त्रिया, कनक सिरी तस नाम । तुमतो पकड़ी टेक जो, नही छोड़ते स्वाम ॥ ४९ ॥ जैसें ब्राह्मण पुत्र इक, तैसें तुम निरधार । तद जम्बू स्वामी कहें, ते जाधो मुझ नार ॥ ५० ॥ कामिन कहे स्वामी सुनो, एक गामके माह । पण्डित ब्राह्मण एक था, तिसका सुत है तांह ॥ ५१ ॥ पिन मुरख समझे नही, पिता कियो तव काल । तद माता सुतको कहे, सीख सुनो मुझ वाल ॥ ५२ ॥ कोइ वस्तु जे पकड़िये, छोड़ी जे नहि तेह । बचन मान लियो जबें, माता कहतो जेह ॥ ५३ ॥ इकदिन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खर कुंभारका, जार दियो सब गेर । जागा नगरी बीचमे, कोइ न आवें नेर ॥ ५४ ॥ प्रजापती तिहां दौड़ता, आवें करता सोर । पकड़ो २ कहि तवें लोक न आवे और ॥ ५५ ॥ (चौपाइ) ब्राह्मण को सुत मूरख जोय, गर्दभ पूंछ गहीहै सोय । खरतो मुह पर मारे लात, तोहि न छोड़े मूरख जात ५६ ॥ लोक कहे मूरख तें बड़ा, एती लात ज मुह पर पड़ा । तब उह बोला सुनहो लोक, तुम मूरख जो बोलो फोक ॥ ५७ ॥ मै पन्डित हों ऐसा कही गही वस्तु किम छोरुं सही । मेरी माय शिखाया जबें, गही वस्तु किम छोरुं तबें ॥ ५८ ॥ तैसें स्वामी तुमने किया, सीख सुधर्मा स्वामी दिया सोइ बचन जु दिढ़ता किया । तौ नहि छोड़ो जो ब्रत लिया ॥ ५९ ॥ ऐसा जोग छोड़के पीव, कहां मुकत चाहो हो जीव । ब्राह्मण सुत सम हांसी होय, एती बात कहा मै सोय ॥ ६० ॥ (दोहा तद जम्बू स्वामी बदे, सुनो त्रिया मुझ पास । हूं उस ब्राह्मणकी तरें, नही तुह्मारो दास ॥ ६१ ॥ त्रिया कहे ब्राह्मण किसो, ते मुझ कहियें स्वाम जम्बू स्वामी तद कहें, कुशल गाम इकनाम ॥ ६२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिहां बसें रजपूत इक, घोड़ी उसके गेह । तिसका सहीस चोरके, दाना बेचे तेह ॥ ६३ ॥ उह घोड़ी भूखी मरे, आखिर कियो काल । मरके एकज गाममे, हुइ ते बेस्या बाल ॥ ६४ ॥ ते सहीस जब काल कर, जनमे ब्राह्मण गेह । पुत्र पने ते अवतरा हुउ यौवन देह ॥ ६५ ॥ (चौपाइ) इक दिन उह बस्याको देख, रूपवन्त है अतिहि विसेष बेस्यासो प्रार्थना करें, बेस्या उसको मन नहि धरें ६६ ॥ उसको करज पूर्बला सही, बेस्यासो बहु तेरा कही । दिल रञ्जनको करता काम, उसके घरका हुवा गुलाम ॥ ६७ ॥ उसके घरका फूठा खाय, नीचकाम करता मनलाय । जातबि खोइ अपना तहीं, मैतो ऐसा मूरख नहीं ॥ ६८ ॥ जो तुमरा फूठा आदरुं, गुलाम होके सेवा करुं । शिव सुखका मै लोभी सही, सुद्ध चेतना जम्बू कही ६९ ॥ (दोहा) जब बोली त्रिया सातमी, रूप स्त्री ते नाम । स्वामी तुम ऐसा करो, मासाहस सब काम ॥ ७० ॥ मासाहस पंखेरुवा, साहस निर भय थाय । बदन व्याघ्रके पैठके, मांस दाढ़को खाय ॥ ७१ ॥ सूता मुहमे बाघके, लगा मांस जो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होय। ते खावे उह पंखिया, अवर न खावे कोय ७२॥ मासाहस मुखसुं कहे, मेरी साहस जोय रखे कोइ न कीजियो, और पंखियो सोय॥ ७३ चौपाइ) उसके देखा देखी और, बाघके मुखमे पैठे दौर। तिसको दाव रखे मृगराज, तैसे स्वामी करते काज॥ ७४॥ परकी होड़ करे जो कोय, आखिर उसको बहुडुख होय। तुमने देख सुधर्मा स्वाम, देखा देखी करते काम॥ ७५ दिक्षा लेने को तुम जए, ऐसा साहस मत करनए। सुधर्मा मासाहस समान, और पंखिया तुमहो जान॥ ७६ दिक्षा कठिन बहुत है स्वाम, डुकर ब्रत पालनको काम। डुखसुं पाली जाती सही, एती बात मै तुमसों कही॥ ७७॥ मासाहस सम साहस धरें ते प्राणी नवसागर तरें। त्रिया आतमी ऐसे कही सुनी बात जम्बु सब सही॥ ७८॥ (दोहा) तब जम्बु स्वामी कहै, रूप श्री सुन बात। हुं धरम मित्रसुं हित करूं, औरन सो न सुहात॥ ७९॥ एहिज जम्बु द्वीपमे, नरत खेत्र मझार। जित सत्रु राजा बसें, आन दान बिस्तार॥ ८०॥ मंत्री नाम सुबुद्धि जो, तीन मित्र है तास। नित मित्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर्व मित्र है, जुहार मित्र फिरजास ॥ ७१ ॥ बहुत हेत नित मित्रसुं, कधी जुदा नहि थाय। खाना पीना पहरना, पहिले देके खाय ॥ ७२ ॥ बार परब को दूसरो, मित्र २ बहु प्यार। तीजा मित्र जुहार को, मिलन सो व्योहार ॥ ७३ ॥ (चौपाइ) राजा कोप्यो मंत्री साथ, पकड़ लाव उसको गहि हाथ चले पकड़ने नृपके दास, आया जाग मित्रके पास ७४ ॥ तव नित मित्रन आदर दियो, जाना कोप रायने कियो। उसे देख मुख टेढ़ा किया, घरके बाहर काढ़ी दिया ॥ ७५ ॥ परव मित्रके मंत्री गया उननेजी नहि कीन्ही दया। अपने घरसुं बाहर किया, निराधार होके मग लिया ॥ ७६ ॥ मिले जुहार मित्रसुं जाय, आदर दियो बहुत अधिकाय घरमे राख दिलासा दिया, राय पास जइ अरजी किया ॥ ७७ ॥ गुन्हा माफ करायो जाय, फिर मंत्रीस्वर कीयो राय। बचा जीवसुं मंत्री ताम धरममित्र आया बहुकाम ॥ ७८ ॥ दोनू मित्रज शत्रू थया, जीव सुबुद्धि मंत्रीस्वर नया। जिसपर कोप किया जमराय, नित्य मित्र देह सङ्ग थाय ७९ ॥ भोजन करे बहुत परकार, पहर बसन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आभूषण सार। बहुत प्यार कर पोष्यो जवें, अन्त काल राखें नहि तवें ॥ ९० ॥ दूजा परव मित्र परवार, मात पिता भाइ सुत नार। कोप्यो काल जीवपर जवें, एसब राख न सकें तवें ॥ ९१ ॥ मसान तक पहुंचावें सही, परव मित्र ऐसा जो कही। स्वारथके सब है परवार, सुद्ध चेतनो उतरे पार ॥ ९२ ॥ (दोहा) निराधार जीवड़ा गया कोइ न आया काम। धरम जुहार मित्र जव, जीव सहाइ ताम ॥ ९३ ॥ बरस मध्य इकवार जो, नाम धरमको लेत। सोइ धर्म इह जीवको, अविचल शिवसुख देत ॥ ९४ ॥ धरम मित्र सम को नही देख्या जगमे जोय। बचे कालसुं जीवड़ा, धर्म सहाइ होय ॥ ९५ ॥ धरम मित्रसुं प्यार है, कहि जम्बू सुन नार। तुमसब परवी मित्र हो, स्वारथिया निरधार ॥ ९६ ॥ तुमसब अपने गरजके सको न काल बचाय। धरम मित्र जो मन बसे कहा करें जमराय ॥ ९७ ॥ (चौपाइ) जैतसिरी जु आठमी नार, जम्बूसुं कहती निरधार। मै नहि मानो तुम जो कही, जैसें द्विजपुत्री रही ९८ ॥ कही रायसुं कल्पित कथा, तैसे स्वामी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करते यथा। जम्बू कहे कौन द्विज धीय, तब त्रिय बोली सुन मुक पीय ॥ ९९ ॥ श्रीपुर नामे है इक गाम, सिरी सार राजाको नाम। तिसको बिसन पड़ाहै आय, नइ कथा नित सुनता राय ॥ ४०० नगर लोक सब कहते कथा, अपनी २ वारी यथा कथा एक नित सुनते राय, जिसकी वारी सो कहि जाय ॥ १ ॥ इकदिन बूढ़ा ब्राह्मण तिहां, तिसकी वारी आइ जिहां। उससे कथा कही नहि जाय बूढ़ा भया शक्ति नहि काय ॥ २ ॥ तद बेटीको ब्राह्मण कही, मेरी बदले तूं जा सही। कथा राय को कहियो जाय, पिता बचन शिर लियो चढ़ाय ३ ॥ ब्राह्मणकी बेटी तब गइ, सनमुख जा राजाके भइ। कथा एक तुम सुनियो राय, पिता हमारा ब्राह्मण थाय ॥ ४ ॥ पुत्र एक ब्राह्मणका जिहां किया सगाइ मेरी तिहां। उह ब्राह्मणका बेटा जवें सूरत मेरी देखन तवें ॥ ५ ॥ मेरे घरमे आया तेह, एकाकी मै रहती गेह। उसे देख मै आदर दिया, आगत भगत बहु बिध किया ॥ ६ ॥ भले भले व्यञ्जन पकवान, उसे जिमाया मैने आन। त्रिप्त हुवा भोजन कर जवें, मुझे अकेली देखा तवें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ ॥ रूप देख मोह्या तेवार, मुझसो भोग किया निरधार । पीछे घड़ी दोय जब हुवा, शूल रागस तब ते मुवा ॥ ८ ॥ तब तिसको मैंने क्या किया गढ़ा खोदके गाड़ी दिया । पर इहबात न जाने कोय, राजा पूछें सांची होय ॥ ए ॥ तब ब्राह्मणकी बेटी कहे, बहुत कथा नृप सुनते रहे । जह सब सांची है जो बात, तो इह सांची है विख्यात ॥ १० ऐसा कहिके घरको गइ, नृप जाना सब ऐसी भइ उस दिनसो राजाजी जथा, छोड़ दिया सब सुनना कथा ॥ ११ ॥ तैसे स्वामी तुमने कही, कलपित बातज इह सब सही । मै नही मानो एसब बात तब जम्बू बोले विख्यात ॥ १२ ॥ (दोहा) हूं ललिताङ्ग समो नही, जो मानो तुम बात । त्रिया कहे ललिताङ्ग कुन, ते भाषो अवदात ॥ १३ ॥ तब जम्बू स्वामी कहें, भरत क्षेत्रमे सार । बसंत पुर नगरी तिहां, सुखिया लोक अपार ॥ १४ ॥ सत्रप्रजव राजा जिहां, रूपवती तिय नाम । ते पटराणी भूपकी, सोभे नृपके धाम ॥ १५ ॥ रूप वती राणी तिहां, गोखें बैठी आय । ललिताङ्ग कुमर लाड़का, देखी सुन्दर काय ॥ १६ ॥ राणी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूती मोकली, तेड़ायो निज गेह । ललिताङ्ग कुमर आवियो, राणी करती नेह ॥ १७ ॥ तिन अवसर भूपालकी, आवनकी सुन बात । तब राणी ललिताङ्गको, कही बचन जयख्यात ॥ १८ ॥ शीघ्र जायके छिपरहो, मोरीमे बहु कीच । कुमर जाय छिपियो तिहां, अटक्यो मोखा बीच ॥ १९ ॥ (चौपाइ) छिपे जाय ललिताङ्ग कुमार. मोरी मध्य रहें निरधार । अटके मोखा मोरी बिच, जिहां बहुत है जूठा कीच ॥ २० ॥ छिपे रहे कोइक दिन तिहां जूठा खाना खाता जिहां । जीया जूठा खाके जवें हुवा दूबला देही तवें ॥ २१ ॥ इकदिन वर्षा ऋतु तव भया, पाणी मोरीमे बहु गया । चल्या प्रवाह जोरसुं नीर, वह आया मोरीके तीर ॥ २२ ॥ निकला बाहिर कुमर सुजान, तव ते आया अपने थान निजघर आया दुख सव गया, फिर शरीरसुं ताजा भया ॥ २३ ॥ इकदिन असवारी कर भला बड़ी जलुससुं कुमर चला। बजार होके आया जवें फिर राणीने देखा तवें ॥ २४ ॥ रूप देखके मोही सही, तव राणी दूतीसो कही । ले आवो ललिताङ्ग कुमार, सुनके दूती गइ तेवार ॥ २५ ॥ तुमको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेड़ं राणी आज, कुमर कहें मेरो नहि काज ।
मोरी बिच फसा था तिहां, मैने जूठा खाया जिहां
२७ ॥ सो दुख मुझको भूला नही, मै नहि जाउं
अवतो तहीं । बहु उपाय राणीने किया, ललिताङ्ग
कुमर दिल नहि दिया ॥ २८ ॥ नहि माना राणी
बहु कही, कहे जम्बु मै तैसा नही । कामिने सवें
सुनो विख्वात, मै नहि मानो तुमरी वात ॥ २९
संसार रूप मोरी माह, कौन पड़े उत्तम नर तांह
दिक्षा लेस्युं जम्बु कही, सुन आठे प्रतिबोधी सही
३० ॥ प्रभवो चोर पांचसे सवें, बचन सुनी प्रति-
बोध्या तवें । आठ तियाके मातरु तात, ते पायो
प्रतिबोध विख्यात ॥ ३१ ॥ एवं पांचसें सत्ताइस
दिक्षा लेस्यें बिस वावीस । परिवार सहित प्रभवो
खास, जास्यें कोनिक राजा पास ॥ ३२ ॥ बीर
प्रभु श्रेणिक सुं कहे, जे तो परधन प्रभवो गहें ।
ते लोकने आपस्यें सही, श्रेणिक आगल भगवन
कही ॥ ३३ ॥ कोणिकने क्षमा वसें आय, धमना
थानक देवें बताय । राजाने देखाड़ी सर्व, प्रभव
भला बीने बहु दर्ब ॥ ३४ ॥ कोणिक आदि सरव
बे तिहां, प्रभवो आयो जम्बु जिहा । आवी कहे

For Private and Personal Use Only

धन्य छो तुमे, चोरी बिसन मुकायो हमे ॥ ३५
दोहा) जम्बुने प्रनवो कहे, संयम लेसुं सङ्ग ।
तव ते कोणिक बोलियो, सुनो बंऊनो अङ्ग ॥ ३६
बंऊराय नो पुत्र छो, तुमसु संयम होय । चोर बिसम
को मूकियो, उत्तम मारग जोय ॥ ३७ ॥ पहिले
तुम कुल ने बिषें, सदा धर्म आचार । इम प्रसंसा
सब करे, राजादिक निरधार ॥ ३८ ॥ हिवें तिहां थी
चालियो, आयो गुरुने गाम । धर्माचार्य गुरू जिहां
नाम सुधर्मा स्वाम ॥ ३९ ॥ जम्बु स्वामी आवियो
आभरणादिक छोड़ । चेतनता सुध होयके, बांदे
दो कर जोड़ ॥ ४० ॥ (चौपाई) जम्बु कहे स्वामी
मुऊ तार, जग सागर थी पार उतार । तिहां सुधर्मा
स्वामी कहें, संयम भार जम्बु निरवहें । ४१ ॥
संयम डुक्कर छे अति घना, मैण दंतसुं लोहा चना
लोह चना चावें नहि कोय, संयम मारग डुक्कर
होय ॥ ४२ ॥ जम्बु सुनो साध आचार, जैनि ग्रंथ
होय अणगार । ते चौवीस बोल मन धरे, जाव
जीव लग ते भव तरे ॥ ४३ ॥ पांचे सुमति गुपति
जै तीन, ए आराधें मुनि परवीन । प्रथम बोल
साधें जे जती, ताको पाप न लागे रती ॥ ४४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देव गुरु आसातना तजें, मन बचन कायासुं नित भजें। दूजो बोल सदा मनलाय, संयम पालें जे मुनिराय ॥ ४५ ॥ ठण्ढा ऊन्हा बांछें नही, धूप शीत होवे जो कही। तीजी बोल साध मन धरें ते संसार सुं हेला तरें ॥ ४६ ॥ परिग्रह बिन साध मार्गें चलें, डुरमत पाप सबी ते दलें। चार बोल एकाकी जान, पालें मुनि पावें शिवथान ॥ ४७ ॥ लोच करावें पञ्चम बोल, ते मुनि लहसें अधकी तोल। नमो तेहने सीस नवाय, भव २ का पातिक सव जाय ॥ ४८ ॥ एकवार जीमे मुनि सदा, रोगादिक आवे नहि कदा। छठा बोलकी एही रीत रस इन्द्रीको मुनिवर जीत ॥ ४९ ॥ सिक्षा भूम करें मुनिराय, भय नहि आने मन वचकाय। सात वोलके लंछन कहें, साध सोइ जो इन विध रहें ५० ॥ आंबिलादिक तपस्या करें, अष्टम बोल मुनि मन धरें। कर्म आठ नहि आवे तिहां, करें तपस्या मुनिवर जिहां ॥ ५१ ॥ सदा योगमे मुनिवर रहें, नवमो बोल सुधर्मा कहें। जे पालें ते साध कहाय, ते मुनि बन्दो मन बचकाय ॥ ५२ सहत परीसह जे बावीस, ते अणगार नमो निस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीस । दशें बोल संयमके कहें, सहे परीसह मन थिर रहे ॥ ५३ ॥ चौविहार रैनको करे, रात्री भोजन मुनि परिहरे । बोल इग्यारे पाले मुनि, सुद्ध चेतना होवे गुनी ॥ ५४ ॥ तजे प्रमाद साध निज अङ्ग, बार बोल पालें मनरङ्ग । साध होय आलस नहि करे, भव सागर सुं हेला तरे ॥ ५५ ॥ बन्ध रहित नित करे बिहार, इम मुनिवर पालें आचार तेरे बोल साधके कहें, अष्टकर्म सुं न्यारा रहें ॥ ५६ पर घरका लेवें आहार, भोजन करे सदा इकवार चौद बोल पालें मुनिराज, आतम साध न करते काज ॥ ५७ ॥ ऊन्हा पानी पीवे सदा, जीव दया छोड़े नहि कदा । पनर बोल को एह बिचार, सचित वस्तु नहि ले अनगार ॥ ५८ ॥ जिम तिम भाषा बोले नही, असञ्जम बेन कहे नहि कहीं सोल बोल निज मनमे धरें, मिथ्या बचन सदा परिहरें ॥ ५९ ॥ वैन लोक ना सहिवो सही, बोल सतरमा इनबिध कही । इह बिध मुनिवर पालें धर्म, तो नहि लागे कोइ कर्म ॥ ६० ॥ एक स्थानक मुनि नहि रहें, यती मार्गमे ऐसा कहें । बोल अगारे एही चाल, जो पाले सो दीन दयाल ॥ ६१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षमा करे साधु नित मेव, जैन धर्मको जाने भेव तजें क्रोध समतामें रहे, उगनीस बोल इनबिध कहे ॥ ६२ ॥ नित पड़ि लेहन कीजे ताम, पूंजि प्रमार्जन करिये काम । सर्ब जीवकी दया बिचार बीस बोल पाले निरधार ॥ ६३ ॥ गुरुको बचन करे परमान, बोल इकवीस इनपरि जान । जो मुनि पालें ज्ञानी होय, शिव थानकमे पहुचे सोय ६४ ॥ आगम सूत्र भणे नित मेव, जिन बाणीके जाने भेव । इह बावीस बोल गुणखान, पाले मुनिवर चतुर सुजान ॥ ६५ ॥ गुरु कुलवास बसे नित मेव, सदा करे मुनि गुरुकी सेव । तेइस बोल साध मन धरे, जनम २ के पातिक हरे ॥ ६६ ॥ पञ्च महाव्रत पाले यती, नितको पाप न लागे रती । इह चौवीस बोलकी रीत, चेतन सुद्ध कियो परतीत ॥ ६७ ॥ (दोहा) इण पर दिक्षा दोहिलो कहे सुधर्मा स्वाम । मेघ कुमर पछताइया, थिर मन कीजै काम ॥ ६८ ॥ जिम अरणक साधू थयो थिर चित सार्‍यो काज । कहे जम्बु गुरुदेव ने कुण अरणक मुनिराज ॥ ६९ ॥ श्री गुरु कहे जम्बु प्रतें, तगरा नामे गाम । दत्त नाम बिव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हारियो, बनिता जद्रा नाम ॥ ७० ॥ पुत्र अरहनक तेहने, करे साधको सङ्ग। धर्म देसना सांजली, लगे धर्मके रङ्ग ॥ ७१ ॥ ऋद्धि तिहुं जन ठांड़िया, दिक्षा लिया जाय। सुतने जिक्षा गोचरी जान न देवे माय ॥ ७२ ॥ (चौपाइ) तिहुं जन दिक्षा पाले सदा, मात पिता सुत अरणक तदा अरणक पिता काल बस थया, दत्तमुनि देवलोके गया ॥ ७३ ॥ गयो तात सुरलोके जवे, माता अरणक रहते तवे। अरणक मुनि गोचरी गया, उस्स काल गरमी बहु जया ॥ ७४ ॥ परिसह मुनि अन सहतो तिहां, विवहारी घर आयो जिहां। गेह निकट मुनिवर तव गया, ठाया देखी ऊना थया ७५ ॥ बिवहारी की नारी तिहां, बैठी मन्दिर गोखे जिहां। पति परदेश गयो व्यापार, गृहमे रहे बिरहनी नार ॥ ७६ ॥ तिहां ऊना साध सुकुमाल, अरणक मुनिने देखी वाल। हरषित जइ साधको देख, काम बिकल्प जइ बिसेष ॥ ७७ ॥ निग्रंथ साधू तेड़ी घरें, कहें स्वामी संयम का धरें ए योवन निर्मल ठे काय, संयम युक्ति नही मुनि राय ॥ ७८ ॥ अयुक्त काम कियो अणगार, संयम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुक्कर है निरधार । मुनिवर मारग दुक्कर जान यौवन बय मत करे सुजान ॥ ७९ ॥ ए मारग बूढ़ापन कही, जरा होय तब कीजो सही । मेरे घर रहिये मुनिराय, मुझ शरीर धन बिलसो आय ८० ॥ अरणक रहे नार जब कही, नैन वैन विधानो सही । सुखे रहे साधू जब तिहां, १ काम भोग धन बिलसे जिहां ॥ ८१ ॥ श्रीगुरु कहें जंबू सुन बात, स्त्री मोह बहु बड़ा बिख्यात । साहसीक नर कायर भया, नन्दिषेन वेस्या घर गया ॥ ८२ काम देवकी इह परिवात, शास्त्र सिद्धान्त कही बिख्यात । बहु नर नारी के बसि रहा, श्री गुरु जम्बू सुं तब कहा ॥ ८३ ॥ तिन अवसर अरणक की मात, नगर माहि फिरती बिख्यात । गाम २ सुत सोधे जहीं, अरणक पुत्र मिला नहि कहीं ॥ ८४ बिरह शोक माता बहु धरे, व्याकुल भूत थइ ते फिरे । अरणक २ करे पुकार, नगर माहि फिरती निरधार ॥ ८५ ॥ फिरती २ साध्वी जिहां, गोख हेठ आई तब तिहां । ते साध्वी अरणक नी मात आवी ऊभी रही बिख्यात ॥ ८६ ॥ सुनी बचन माताकी जबें, अरणक हेठा उतरे तबें । उतरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेठें आयो तिहां, माताजी ऊभीछें जिहां ॥ ८७
अरणक कहे रोय मत मात' हुं तुं तेरो सुत विख्यात
तब ते माता बोली जिहां, रे सुत तेरो संयम किहां
८८ ॥ पुत्र कहे माता सुन बात, मुजसुं संयम पलें
न मात। संयम मारग दुक्कर कही, साहसीक
नर पालें सही ॥ ८९ ॥ हूं तो माता कायर' रही
तब ते गुरणी ऐसा कही। हे अरणक कुल अपना
देष, चिन्तामणि सुं अधिक विसेष ॥ ९० ॥ चिंता
मणि सम संयम जान, मत मूको उत्तम गुण खान
सुनी वचन माताका जवें, ते प्रतिबोध पामियो
तवें ॥ ९१ ॥ फिर संयम आराध्यों सही, विचरें
उस कालमे रही। विषम परीसह अन शन कियो
मोह ममत मूकी सब दियो ॥ ९२ ॥ साधू अरणक
ऐसा भया, अन सन ले सुरलोके गया। इक
अवतारी हो से सही, हे जम्बू संयम इम कही
९३ ॥ (दोहा) जम्बू धर्माचार्य ने, भाषें दो कर
जोड़। कायर ने दुक्कर हुवें, साहसीक ने थोड़
९४ ॥ स्वामी सुधर्मा जानियो, भव्य जीव ए
होय। निर्मल ज्ञान एह छे, धन २ जम्बू सोय
९५ ॥ श्री गुरु जम्बूने दियो, चारित्र रूप निधान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन वच काया सुद्ध है, पाळें आप सुजान ॥ ९६
जम्बु सोल्ल बरसां लगे, कीयो गृहस्था वास ।
सतरमे बरसे लियो, सञ्जम उत्तम खास ॥ ९७ ॥
सञ्जम ले बहु तप करें, बिचरें आतम जाव ।
अनेक नेद ठे तप तणा, तिनसुं राखे चाव ॥ ९८
चौपाई) तप करते नित बहु उजमाल, ठठ अष्टम
दशम डुआल । मास क्षमन तप करते जान, मास
क्षमन साधें गुणखान ॥ ९९ ॥ बीश बरस ठद्म
मस्थे रहें, बिचरें मुनि परीसह सहें । शुक्ल ध्यान
ने जोगें जान, उपज्यो निर्मल केवल ज्ञान ॥ ५००
बर्ष चमालिश केवल पाल, असी बरसनो आऊ
टाल । सब डुखनो क्षय करस्ये जवें, मोक्ष परापत
थासे तवें ॥ १ ॥ वीर कहें श्रेणिक सुं बात, हम
सुं चौसन्न बरस बिख्यात । पाबें जम्बु केवल ज्ञान
केवल पाल जाय शिव थान ॥ २ ॥ हमसें पठें
बारमें साल, गौतम केवल होय बिसाल । पीठे
आठ बरस जव जाय, केवल पद सौधर्मा थाय
३ ॥ हम थी बीस बरस जब थया, सुधर्म केवलि
मुक्ते गया । पठें बरस चमालिश ताम, केवल पालें
जम्बु स्वाम ॥ ४ ॥ श्रेणिकसुं कहते नगवान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्बु पीछे जावे ज्ञान। दशें बोल विछेदें जाय ताको नाम कहो सुन राय ॥ ५ ॥ एक बोल मन पर्यव ज्ञान, दूजो परमा अवधी जान। पुलाग लवधी तीजो कहें, एती ज्ञान नही कछु रहें ॥ ६ आहारक शरीर नहि जवे, चौथा बोल कहा मै तवे। खायक समकित पांचम नही, छठा उपसांत मोहन कही ॥ ७ ॥ इग्यारमा गुण ठाणा जाय जिन कल्पीको मार्ग न थाय। सतम बोल नही रहे कोय, ज्ञान विना कछु सिद्ध न होय ॥ ८ ॥ त्रिकरण सञ्जम मन वचकाय, लेवें पालें जे मुनि राय। इहवी बोल जम्बु तक रहा, बोल आठारमा इनविध कहा ॥ ए ॥ केवल ज्ञानकी प्राप्ति न होय नवमो बोल कहावे सोय। जम्बु पीछे केवल गया तो मत छाड़ो मुनिवर दया ॥ १० ॥ दशमा बोल मोक्ष पद जान, श्रेणिकसुं कहते जगवान। इह दश बचन गया विछेद, सुद्ध चेतना जाने जेद ॥ ११ दोहा) हे श्रेणिक जम्बु तणा, पांचे जवकी बात ए दृष्टान्त संखेप सुं, जानोगे विख्यात ॥ १२ ॥ जम्बु चरित्र ने विषै, बहुत बात विस्तार। इहां संखेपे जानियो, दया धरम चितधार ॥ १३ ॥ जम्बु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरित्र सांभली, सद्दह सीजे कोय। ते आराधक जानिये, भव्य जीवसो होय ॥ १४ ॥ जम्बुना अध्येनमे, इकविसमा उद्देस। तिहां बहुत बिस तार है, यामे छे लवलेस ॥ १५ ॥ भाषा जम्बु चरित्र ए, पूरो भयो सुजान। भणे गुणे जे सांभलें ते पावे बहु ज्ञान ॥ १६ ॥ वाचक पद धारक भए ऋद्धि बिजय गुरुदेव। तिनके सिष चेतन बिजय नही ज्ञानको भेव ॥ १७ ॥ श्री गुरुदेव दया किया उपजा मनमे ज्ञान। भाषा जम्बु चरित्रकी, रचना रची सुजान ॥ १८ ॥ ज्ञान कछु जानो नही, कियो बुद्धि बिस्तार। यामें जो कछु चूक है, पण्डित लेहु सुधार ॥ १९ ॥ संबत अठारे बावने, श्रावनको है मास। सुकल तीज रबिबार को, पूरो ग्रन्थ बिलास २० ॥ बङ्गदेस गङ्गा निकट, गञ्ज अजिम पबित्र। श्री चिन्तामणि पासको, देवल रचा बिचित्र ॥ २१ सतरे सिखर सुहावनो, गुमटी च्यार सुचङ्ग। सोभे कलस सुवर्ण के, इकइस रूप अनङ्ग ॥ २२ बिम्ब मनोहर सोभतो, पारस परम दयाल। नर नारी दरशन करें, सदा होय उजमाल ॥ २३ ॥ ऊपर चौमुख राजते, श्री सीमन्धर देव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जात्र जगति चित लायके, सब जन करते सेव ॥ ५२४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

❀ ॥ ❀ इति श्री जम्बु चरित्र सम्पूर्ण ❀ ॥ ❀

For Private and Personal Use Only

अथ परदेशी राजाकी

चौपाइ ।

(दोहा) राय प्रसेणी सूत्रमे, राय प्रदेशी नो नाव । सूरीयाज सुर मरिने हुवो, धरम तणे परनाव ॥ १ ॥ आमल कंपा नगरीयें, समोसऱ्या महावीर । सुरीआज तिहां आवियो, नाटक करिवा तीर ॥ २ ॥ दक्षिण बाम जुजा थकां, काढ्या एकसो आठ । कुमरी कुमर जुदा २ नाटक करणे घाट ॥ ३ ॥ बीर चरित्र धुर माड़िने, आण्यो नाटक माहि । गोतम प्रमुखे दिखाइने, निज थानक सो जाइ ॥ ४ ॥ देव तणी ऋद्धि देखिने पुछे गोतम स्वामि । एतलि ऋद्धि इण काढ़ने धरी कोनसे ठाम ॥ ५ ॥ गुफा प्रगट द्वारे जणी घणा मानवी होय । मेह आये माहे धसै, बारे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिसे न कोय ॥ ६ ॥ कपड़ो काढ़ि बजाज जिम बांधि माहि दे मेल । शुराआत्र तिम देवने, ऋद्धि लेइ संकेलि ॥ ७॥ पूरब भव प्रभु कुन हुंतो, बसतो कुन से गाम । करणी इण केसी करी, कहो कृपा करि स्वाम ॥ ८ ॥ पाछिल भव करणी करी, माड़ि कहे बर्द्धमान । गोतमादिक संघ आगले, ते सुन ज्यो करि ध्यान ॥ ९ ॥ (ढाल १) तिनकाले तिनहि समेजी, जम्बुदीप मझार । भरत खेत्र सेतंबिका जी, नगरी हुंती बिसतार हो ॥ गोतम पूरबलो भव एह १० ॥ अति खिमा अधिकी करी जी, जहर दियो निज नारी हो ॥ गो० पू० ११ मृगबन नाम उद्यानमे जी, दिशा इशानके माह पान फूल फल सोभतो जी, शीतल गहरि छांह हो गो० पू० १२ ॥ सेतंबिका नगरी तनो जी, हुंतो प्रदेशी राय । हिमबन्त नगरिनी उपमा जी, मोटो राय कहाय हो ॥ गो० पू० १३ ॥ अधम पाप बलज हुंतो जी, अधरमी लोक प्रसिद्ध । अधरम पूछे हिंसतो जी, अधरम ब्यापार निबिधि हो गो० पू० १४ ॥ अधरम मे राच्यो रहे जी, अधरम नो उतपाते । अधरम नी कोइ कहे जी, तुरत जु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माने बात हो ॥ गो० पू० १५ ॥ जीव हने खड्गें करी जी, नालासुं करे भेद । क्रोधे रीस चढ़ायने जी, सूड़ क्षुद्र हुवे खेद हो ॥ गो० पू० १६ ॥ हींस्या जीव जु मारता जी, होय घणो साहसीक हाथ खरड्या लोही थकी जी, इसी लगावे लीक हो ॥ गो० पू० १७ ॥ लांच सुंक लेतो थकों जी, कर लगावतो लार । निंद्या करतो परतणी जी कुड़ कपट भणढार हो ॥ गो० पू० १८ ॥ परचण्ड पाखन्डी हुतो जी, मनग्राही अभिमान । सील रहित ब्रतको नहि जी, नहि पोषद पच्चखाण हो गो० पू० १९ ॥ कबहु उपवास न कियो जी नही क्षिमा मरजाद । निरगुण घनो औगुण ग्रही जी कूड़ो बाद बिबाद हो ॥ गो० पू० २० ॥ घणा दुपद चोपद भणी जी, मिरगादिकनी जात । खेचर उंदर नो लिये जी, करे इत्यादिक घात हो गो० पू० २१ ॥ चकड़ी करके मारतो जी, नागादिक सो कूट । खाल उपाड़े जीवतां जी, पाप किया सन्तुष्ट हो ॥ गो० पू० २२ ॥ अधरम नी बांधी धजा जी, केतु ग्रह सम जान । साधरमी आया थकां जी, तुवे नही अभिमान हो ॥ गो०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पू० २३ ॥ बिनय जाव कोइ नही जी, नही आसन नी ठंरु । जो निजपर नादे सभे जी, करे आकरो दंरु हो ॥ गो० पू० २४ ॥ कर आकरो लगावतो जी, बिचरतो इन रीत । धाठ जिसा ज्ञानी कह्या जी, तिन बिरियानी नीत हो ॥ गो० पू० २५ ॥ पटराणी ठे रायनी जी, सूरीकन्ता नाम । हाथ पाव सुकमाल ठे जी, धारणी परे नवआम हो गो० पू० २६ ॥ राजा सु अति रागीणी जी, सब-दादिक बहु प्रीत । सुख बिलसें संसारना जी, न गमे काल बिदीत हो ॥ गो० पू० २७ ॥ सुत पर-देशी रायनो जी, राणी नो अङ्गजात । सुरीकन्त नाम हुतो जी, सूपकला बिख्यात हो ॥ गो० पू० २७ ॥ ऋद्धि दाने बहु दीपतो जी, लोक कहै धन धन्न । कोठारी जन्डारनो जी, उमराव दे बहु मान हो ॥ गो० पू० २ए ॥ परदेशी राजा तने जी हाथी घोड़ा देश । रथ पायक बहुला हुंता जी माल जन्डार बिसेष हो ॥ गो० पू० ३० ॥ राजानो जाइ बड़ो जी, हुंतो चित्र प्रधान । मित्र सखा सम जानिज्यो जी, बुद्धिवन्त गुणवान हो ॥ गो० पू० ३१ ॥ दानादिक करि दीपतो जी, लोकांमे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदभूत। लेइ रूंक सन्तोषने जी, बांध्यो राजनो सुत हो॥ गो० पू० ३२॥ चारि बुद्धि करि दीपतो जी, घणी अधिक उतपात। अणदिठी अणसांभली जी, आण मिलावे बात हो॥ गो० पू० ३३ बिनय कर्म परनाम की जी, चारूं बुद्धिने जोग गाम नगर परि सिद्धि घणो जी, माने राजा लोग हो॥ गो० पू० ३४॥ राय परदेशी के घणो जी, कारण चिंतनो जोर। घणो पूछिवा जोग छे जी, पूछे बारम्बार हो॥ गो० पू० ३५॥ राज नगरने लोकमे जी, मेढ़ी नेत्र समान। आधार जुत आलम्बणो जी, न्यायवन्त अभिराम हो॥ गो० पू० ३६ नृप तणी आज्ञा थकी जी, अन्तेवर मे जाय। अति प्रतीति संका नहि जी, बहु मन मांही सुहाय हो॥ गो० पू० ३५॥ परदेशी राजा तणो जी, अन्तेवास कहाय। देश कुंणाला सावथी जी जितसत्रु तिहां राय हो॥ गो० पू० ३८॥ सावथी नगरी तणो जी, कोष्टक ने उद्यान। पत्र फूल फल सोभतो जी, बरनन मोट मान हो॥ गो० पू० ३९ दोहा) परदेशी तिण अवसरे, चित प्रधान ने तेड़। जाउं नगरी साव थी, जितशत्रु नृप केड़

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४० ॥ ले जाउं इम जेटणो, जितशत्रु ने सौंप। तहत बचन चित मानियो, स्नान ध्यान करि चोंप ॥ ४१ ॥ हुकम कियो सेवक जणी, रथसजि कियो तयार। रथ चढ़ीने चित चालियो, सङ्ग सुजट परिवार ॥ ४२ ॥ सुख समाधे चालतो, आयो सावथि माहि। बेग उतर रथसों तिहां, जेटण नृपना पाय ॥ ४३ ॥ लेइ मोटो जेटणो, मेल्यो नृपने पास। राय प्रदेशी कहि जिका, सरव बात प्रकाश ॥ ४४ ॥ सुनि राजा हरषित हुवो, चित्तने फेरो दीध। सातभुंम आकाश मे, उतरो सुखमे लीन ॥ ४५ ॥ जोग पञ्च इन्द्री तणा बिचरे जोगत एम। एकमना थकी सांजलो, जिन धर्म पामे केम ॥ ४६ ॥ (ढाल २) तिण अवसर पास संतानिया जी, केशी समण कुमार। गुण ज्ञानी देवै आप बरण व्यारे, पांचसै परिवार ॥ जलाइ पधार्या हो पास संतानिया जी० ४७) टेक० ॥ बिनय ज्ञान सहित चारित्र जलो जी, आठों प्रबचन माय। लज्याने मरजादा आचार नी जी, हलवा डरुयने जाव ॥ ज० ४८ ॥ मन बच काया नो तेज छे जी, घणो जस सोजाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीत्या चारि कषाय नली परें जी, तृष्णा लोन नो त्याग ॥ न० ४ए ॥ जीती निंद्रा पञ्चेंद्री दमी जी, परी सावली वाबीस । जीवन आसा मरणरो नय नही जी, तपस्या करण साहसीक ॥ न० ५० सञ्जम पालता बहुगुण पड्या जी, चरण करण परधान । निसेध छे अनाचार नो जी, तत्वनो निर्नय मान ॥ न० ५१ ॥ मान माया दवटे राखी जी, रुध्यो क्रोधने लोन । किरिया तणी खप वहुली करे जी, खंत्यादिक गुण सोन ॥ न० ५२ बिद्या मंत्र करी नरपुर था जी, ब्रह्मचर्य परधान आगम बेद करीने आगला जी, साते नयना जाण ॥ न० ५३ ॥ नियम अनिग्रहमें काठा घणा जी, सेठो झाल्यो साच । सुच प्रधान द्रव्य नाव थी जी, निकलङ्क काठ नवाच ॥ न० ५४ ॥ नाण प्रधान मत्यादिक निरमला जी, दरशन चारित्र एम । चारि ज्ञान चौदे पुरव धणी जी, अधिक दया धर्म प्रेम ॥ न० ५५ ॥ साध पांचसै साथ परिवस्या जी, करता उग्र बिहार । गाम नगर उलङ्घता नी, सुखैं २ तिहां लार ॥ न० ५६ ॥ जिहां पिण सावथी नगरी कने जी, कोष्टक बनके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माहि । यथाजोग्य थानक लेइ जी, उतरा बे तिहां आय ॥ ज० ५७ ॥ बिचरे सञ्जम चोखो पालता जी, आतम ईण भाव । किणबिध आवै परिषदा बांदवा जी, सुणजो सहु धरि चाव ॥ ज० ५८ ॥ तिण अवसर नगरी सावथी तणा जी त्रिक चोकादिक बाट । लोक कहे केसी गुरू आविया जी, पांचसे मुनीने थाट ॥ ज० ५९ ॥ माहो माहे चरचा ईणविध करे जी, नाम लिया निसतार । जिनना दरशन वाणी सुण्या थकां जी निहचै होय भवपार ॥ ज० ६० ॥ केइ कहे दरशन देखस्यां जी, केइ कहे सुनस्यां बाणी । केइ कहे मनना संसा भांजस्यां जी, केइ कौतुहल जानि ज० ६१ ॥ एक अक्षर आरजनो सामले जी, इण भव परभव खेम । घणा अरथ भाख्यां शिव सुख हुवै जी, नही संसो इहां केम ॥ ज० ६२ ॥ ईम बिचारि घोड़ा चढ्या जी, केइ रथने सुखपाल । के पालिकि याके घुरु वहलमे जी, गया तिण बागवि चाल ॥ ज० ६३ ॥ पांच अभिगम विधी सुं साचवै जी, मन बचनने काय । सेवा करता तिन प्रकारनी जी, जिम उववाइ माहि ॥ ज० ६४

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिण अवसर चित्त सारथी जी, सुणि जन शब्द विसेष। चिन्ता मन माहि एहवी उपनी जी, बहु जन जाता देष॥ ज० ६५॥ सावथी नगरी मे आज किसो अछे जी, इंद्र महोछव कोइ। कार्त्तिक हरि चतुरानन रुद्रनो जी, नाग वैश्रमण होय॥ ज० ६६॥ भुत यक्ष कोइ भैरव कोइ देहरो जी, बृक्ष परबत गुफा कूप। नदी तलाव नाहाइद समुद्रनो जी, एता प्रमुख अनूप॥ ज० ६७॥ भोग उग्र-कुली कुल उपना जी, इक्षाग वंशी आय। सजि आभरण चढ्या निज बांहने जी, टोलै मिल २ जाय॥ ज० ६८॥ चित मनमे इम तेवडी जी, सेवक पुरष बुलाय। चित उपनी सो मांफी कहि जी, करि प्रणाम पहुजाय॥ ज० ६९॥ केसी आया नो निहचो हुंतो जी, सेवक बोल्यो सोय। ईंद्रादिक सरवर तनो नही जी, आज महोछव कोय॥ ज० ७०॥ केशी स्वामी पांचसै साधूसों जी, बाग पधास्या तेह। उग्रादिक कुल बहुजन बन्दिवा जी, जाइ सबद हुवे जेह॥ ज० ७१॥ गुरू आयानो हरष हुवो घणो जी, सेठ सेनाधिप जाइ। बन्दन पुजन बिधि मांफि कहि जी, चित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुणी हरषित थाय ॥ ज० ७२ ॥ (दोहा) सेवक नरने तेडिने चित्त कहे एहवी बात । रथने सजि तयार कर, च्यार घंटारो रथ ॥ ७३ ॥ सेवक सुनि हरषित थयो, रथ सजि कियो तयार । स्नान विले-पन चित करी, सज गहणा कस्या सिणगार ॥ ७४ अलप जार बहु मोलना, अद्भूत सजि सिरोपाव रथ बैसी चित चालियो, वन्दन नो धरि चाव ॥ ७५ ॥ सूर सुजट नर परिवस्या, कोरंट फूलनी माल । माथे छत्र धरावतो, सावथी नयरी विचालि ७६ ॥ चित बलिने तिहां आवियो, कोष्टक नाम उद्यान । रथ थापीने निकट थी, वंद्या गुरू बहु मान ॥ ७६ ॥ तीन प्रदक्षिणा दे करी, वंद्या श्री गुरूदेव । करतो सनमुख बेसिने, तीन प्रकारनी सेव ॥ ७७ ॥ चित प्रमुख परिषद जणी, केशी दे उपदेश । जव्य जीवां समजायवा, जीवदया धर्म वेस ॥ ७८ ॥ चारि महाव्रत धर्म मे, मारि कहै बिसतार । चोथे चित आराधतां, हुवे जीव निस तार ॥ ७९ ॥ परिषदा सुन हरषित थई, वन्दी निज पुर जाय । चित्त पिण सुनि रीज्यो घणो, जिन धरम आयो दाय ॥ ८० ॥ चित वंदीने इम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहे, मे सरध्या तुम वेण। सुरग मुकति दायक सही, जो साचा थे सेण ॥ ७१॥ रूच्यो धरम परितीतसुं, तहत जाणि निसन्देह। इण्णो पुछो बलि बली, धर्म्म कहो तुम एह ॥ ७२ ॥ सेठ सेनाधिप राजवी, उग्र कुलादिक सार। धन बांहन देशादितजि, लीधो सञ्जम जार ॥ ७३ ॥ ऐसी पुंह चन माहरी, तजुं अथिर संसार। पिण मुझने समझाइयो, श्रावक व्रत ल्यो बार ॥ ७४ ॥ ढील करो मति गुरू कहे, जो छै ताहरा जाव। चित्त हाथ जोड़ी कहे, व्रत लीधा करी चाव ॥ ७५ ॥

ढाल ३) कहीये मेलसी श्रावकना व्रत वार एदेशी

देव धरम गुरु साचा धारिने, तजीयो चित्त मिथ्या तो जी। खरी पारषा आइ धरमनी, जेदी सातें धातो जी ॥ चित उजलाविरे निज आतमा० ७६ केशी गुरु दिल धारो जी। सुगरु सङ्गति किया थकां, निहचै खेवो पारो जी ॥ चि० ७७ ॥ त्याग कियो तस मारण तणो, जाने पिढि आकुड़ा जी। पांच झूठ तजा मोटका, मोटी चोरी करि बुटो जी चि० ७८ ॥ परनारी नो त्याग न कियो, आपणी नी मरजादो जी। परिग्रह मरजाद पांचमे, उगो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिश व्रत धारो जी ॥ चि० ८९ ॥ मरजादा बोल छवीसनी, पनरै करमा दानो जी । अनरथ दन्ड त्याग आठमो, सामायक व्रत नवमो जी ॥ चि० ९० दशमो देशावगासिया, ग्यारमो पोषध सारो जी अतिथ संबिभाग व्रत विधि करी, एह व्रत बारो जी ॥ चि० ९१ ॥ पञ्च पकार अणुव्रत कह्या, तिन गुण व्रत रीतो जी । सिख्या व्रत चउबिधि धर्या वारह कह्या बिनोती जी ॥ चि० ९२ ॥ श्रावक धर्म इम आदर्यो, बांध्या गुरु हुलासो जी । चउ घंटा रथ बैठिने, पहुंत्यो निज आवासो जी ॥ चि० ९३ ॥ तवतै चित श्रावक हुवो, नवतत्व जीव अजीवो जी । पुन्य पाप आश्रव संवरो, निरजरा ने बंध मोषो जो ॥ चि० ९४ ॥ ए नवतत्व धार्या निरमला, किरिया अधिक रण जाणो जी । काहो बिचक्षण ज्ञानो करी, पतलो कपटने मानो जी चि० ९५ ॥ आपदा कष्ट पड्या थकां, न बांछै देवनो साजो जी । सुर नागादि चलावै धर्मसुं तो न चलै धरम लाजो जी ॥ चि० ९६ ॥ जिन प्रवचन मे सङ्का नही, पर पाखंडनी नहि चाहो जी । फल प्रतै मनना धारै, लाभा अरथ प्रह्लायो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जी ॥ चि० ए७ ॥ अरथ पुछे निरणो करे, सांचै अरथ करे ढंगो जी। हाड़ हाड़ मीजी बहुरङ्गी, जिसो किरमची रङ्गो जी ॥ चि० ए८ ॥ गुरुदेव पासे धारियो, एह अरथ परमंठो जी। पुत्र कलत्र धन धानतैं, जाण्या सहु अनरथो जी ॥ चि० एए ए गुण दरशन समकित ना कह्या, चारितना गुण एमो जी। चउदश आठम पुनिममावस्या, पोषध करे धर पेमो जी ॥ चि० १०० ॥ कल्याण कारिणी तिथि तीनुं बड़ी, चउमासानी संधे जी। तिनमे प्रति पूरण पोसा करे, छोड़ि संसारना फन्दो जी चि० १ ॥ दान देवानि मतीछै निरमली, आगल जोगल बारो जी। स्फाटक नीपरे हियो निरमलो मुक्या अनङ्ग दुवारो जी ॥ चि० २ ॥ अप्रतिती घरमे पईसे नही, पैठा नही अप्रतीतो जी। सम णनि ग्रंथने फासुए घणा, दान देवै सुबिनीतो जी चि० ३ ॥ असण पानने षादम सादमे, पीढफलग संथारो जी। शय्या बस्त्र पात्रने कामलि, ओसड भेषज सारो जी ॥ चि० ४ ॥ इत्यादिक दान प्रति लाभता, घणों शील आचारो जी। नान्हा मोटा सोंस वरतमे, सैंठी सरधा धारो जी ॥ चि० ५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीजा उपवास एकासणा, देइ नोकारसी आदो जी इणपरि बिचरे चित बिन्नावतो, सरधा संबेग जादो जी ॥ चि० ६ ॥ गुण इकविस करे चित दीपतो, तेहना जिन्न जिन्न नामो जी। एह कथाने परंपरा कह्या, सुनज्यो धारि बिबेको जी ॥ चि० ७ ॥ पहिलो गुणतो क्षुद्र पनो नही, धरमोप गरणनो धारो जी। दूजो गुण रूप श्रावक तणो, प्रकति सरम तीजे सारो जी ॥ चि० ८ ॥ करतुत कारी जस या लोकमे, चउथो सबनुं प्यारो जी। कूड़ कपट परनाम न पांचने, रूरपे पापथी न्यारो जी चि० ए ॥ सातमे केहने ठग बञ्चे नही, आठमे दाक्षन्य कयालो जी। नवमे लज्जावंत होइ धरमे करै, दोहला दया संन्नालो जी ॥ चि० १० ॥ हुवै मध्यस्थ राग द्वेष पातला, गुण इग्यारमो छै एह जी। नली सोमदृष्टि होई बारमे, गुणनो राग सनेहो जी ॥ चि० ११ ॥ धरम कथा दृष्टांत गुण चौदमे, कहेज रूडै नावो जी। जैन तनो पष मिलतौ पनरमे, अवर पुन जानन चावो जी ॥ चि० १२ ॥ बड़ा जिम किरिया करै सतरमे, आनंद जिम कामदेवो जी। बिनय करै गुर मायितनो,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगारमें बहु भेदो जी ॥ चि० १३ ॥ जाण हुवो कीधा उपगारनो, बीसमें पर हितकारो जी। काम कार्य करै घणो तहितसुं, लबधि लषी बिसतारो जी ॥ चि० १४ ॥ थोड़े कहे पिण भाव जाने घणो, इकविसमो गुण एमो जी। इत्यादिकश्रावक गुण दिपता, चित भणी गुण एमो जी ॥ चि० १५ सरधावंत गुण करि दिपतो, एहवो चित परधानो जी। दिते बिते अढे युगतसुं, दिन २ चढ़तै वांनो जी ॥ चि० १६ ॥ जिन मारगनै घणो दिपावतो हिंसा धर्म हरंतो जी। परचो छोडैछे पाखण्ड तनो बाद बिवाद षडंतो जी ॥ चि० १७ ॥ अतिचार लागा आलोवतो, सूत्रमाहि बिसतारो जी। एहवा श्रावकना गुण बरणव्या, सुणतां भणतां निसतारो जी ॥ चि० १८ ॥ (दोहा) तिन अवसर सझ भेटनो, जितसत्रु राजान। चित भणी ए तेड़िने बचन कहै छै बांन॥ १९ ॥ जा तुं नगरी सेतंबिका लेई भेटणो एह। परदेशी राजा भणी, पुहुंचावो ससनेह ॥ २० ॥ पगे लागणो माहरो, कहि राजाजी ने जाय। प्रमाण बचन चित करि लियो हाथ भेटणो सहाय ॥ २१ ॥ चित जिहां थी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उठिने, मनमे धास्यो आम । सेतंबिकानी बिनती करिजे केशी साम ॥ २२ ॥ मेतो जिन धर्म पामियो, मोटा गुरु संजोग । सेतंबिका गुरु पांगुरे तो समजे राजा लोग ॥ २३ ॥ एसी करि बिचारणा रथ बैसी चित जाय । किनबिध करे जतावणी, ते सुनज्यो चितलाय ॥ २४ ॥ इछामुनि बैठा रहे इछा करे बिहार । पिण श्रावकने बीनती, करिवांनो व्यवहार ॥ २५ ॥ समजनहारा समजसें, निश्चै नय इम जान । पिण साधु तारक कह्या, ए व्यवहार प्रमाण ॥ २६ ॥ हेतु युगत दृष्टांत दे सारै घणानो काज । पर उपगारी इम कह्या, तारण तरण जहाज ॥ २७ ॥ सुबुधि नाम प्रधान जिम फरसो उदह जल कीध । जितशत्रु राजा जणी, श्रावकना ब्रत दीध ॥ २८ ॥ लियो राजानो जेट णो, सुन सुत्रनी बात । केशी गुरूने जेटीया, जब हीरो लागो हाथ ॥ २९ ॥ द्रव्य हीरा पाया थकां इण जव माही सुख । ज्ञान हीरा पाये मिटे, जव अनंतना दुख ॥ ३० ॥ इंद्रादिक देव लोकना पुद्गलिक सुख जोय । निरञ्जन निराकारना, आतमीक सुख होय ॥ ३१ ॥ तिण कारण करूं बीनती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुकति धरमने हेत। जाव दलाली हिव सुनो होय घणा सावचेत ॥ ३२ ॥ (ढाल ४ रसिया नीदेशी) चित इम लेई राजाने भेटणो, आया गुराजीने पास हो। महामुनि। सेतंबिकाने जाता जावसुं, बन्दन करे हुलास हो ॥ म० पूज पधारो जी नगरी हम तणी ३३ ॥ होसी घणो उपगार हो। म०। घणा जीवाने मारग आनस्यो, देस्यो पार उतार हो ॥ म० पू० ३४ ॥ सेतंबिका नगरी हो सामी दीपती, सदाई देखिवा जोग हो। म० तिणमे आया नफो बहु नीपजै, सुखी बसे बहु लोग हो ॥ म० पू० ३५ ॥ परदेशीने मेल्यो भेटणो ले चाल्यो छै जेम हो। म०। इकवार दोवार किधी बिनती, गुरु नही बोल्या तेम हो ॥ म० पू० ३६ तीजी वार करतां बिनती, दृष्टांत दे मुनिराय हो म०। फलियो फूल्यो कोई बाग छै, पशु पंखी जाय के न जाय हो ॥ म० चतुर नर दे उत्तर हमने इण बातरो ३७ ॥ हां सांमी जाय इम चित कहै, बलि बोल्या श्याम हो। च०। तिण बागमे कोई पारधी बसै, तो जाय कै नहि जाय हो ॥ च० ३८ ॥ नहि जाय पंखी चित इम कहै, भय उपजै तिण गाय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो। च०। इण दृष्टांते सेबिया नयरीयें, बसै परदेशी राय हो॥ च० ३९॥ थांरो प्रयोजनसुं रायसुं, बचन कहै चित एम हो। म०। लोक बसेठ सेठ सेनापति, करसी स्वामीजीरी सेव हो म० पू० ४०॥ भाव सहित बहिरावसी, असनादि चारों आहार हो। म०। बस्त्र पात्र थानक प्रमुख नी, होसी पूजा सतकार हो॥ म० पू० ४१॥ भांति २ करि कीधी बिनती, चितडा हो सुबि- नीत हो। म०। बलि मुनि बोल्या चित जाणसी जिम साधानी रीत हो॥ म० पू० ४२॥ सुन बाणी चित हरषित हुवो, रोमांचित थई देह हो। म० समझो धरमी नरनो खरो, धरम दलाली सुं नेह हो॥ म० पू० ४३॥ (दोहा) बन्दन कीधी भावसुं, श्री गुरुने बहु राग। लेई भेटणो चालतो आयो सेबिया बाग॥ ४४॥ बन पालकने इम कही, आवै केशी स्वाम। तो तुं देज्यो आगन्या पाट पाटला ठाम॥ ४५॥ जिन अवसर गुरु पांगुरे, खबर दीजियो मोहि। आया तणी बधा- मणी, आशा पूरो तोहि॥ ४६॥ इणबिधि करी जतावणी, चित आयो निज गाम। पांच सयांसुं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पधारिया, बिचरत केशी स्वाम ॥ ४७ ॥ नाम गोत्र बुझी करी, थानक आज्ञा दीध। तिन आवि चितने कही, जाणु अमृत पीध ॥ ४८ ॥ सुनता हेठे उतरयो, स्तुति बन्दन बहु कीध। रथ बैसी बन्दन चलो, जिन गुण मारग लीध ॥ ४९ ॥ करि बन्दन बैठ्यो तिहां, गुरु दीधो उपदेश। बीजी सब परिषद सुणी, जीव दया धर्म एष ॥ ५० ॥ साजल सहु हरषित हुवा, फिर प्रणम्यां गुरु पाय धर्म्म दलाली चित्त करै, ते सुनज्यो चितलाय ॥ ५१ ॥ (ढाल ५ ननदलरी देशी) हाथ जोड़ी करे वीनति, सांजल जो मुनिराय हो। स्वा०। राय प्रदेशी पापीयो, आणो मारग ठाई हो ॥ ५२ स्वा० ॥ म्हारे राजाने धर्म सुणावज्यो, होसी घणो उपगार हो। स्वा०। डुपद चोपद पसु पंखिया, साता उपजै सार हो ॥ ५३ स्वा० म्हा० रूंरू करने थोड़ो लेवै, जीवनी जयणा थाय हो स्वा०। पशु पंखी मिरग उंदर नोलिया, उपजै दया दिलमाहे हो ॥ ५४ स्वा० म्हा० ॥ सरव प्रजा साता लहै, देश बिदेश सुख होय हो। स्वा०। लाज गुण होसी घणो, टलसी घणानो दुःख हो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५५ स्वा० म्हा० ॥ कीधी वलि २ बिनती, उपगारी होइ नरम हो । स्वा० । गुरु कहे चिहुं बोलां करी नल है केवल धरम हो ॥ ५६ चितजी हुं धरम सुनाउं किनबिधे ॥ किम करि आणु गाम हो चि० । चार बोलते सांभलो, जासु तेहना नाम हो ॥ ५७ चि० हुं ॥ बाग थानक आया साधजी सांमो न जाय चलाय हो । चि० । बन्दण जाव करे नही, चरचा न करे चितल्याय हो ॥ ५८ चि० हुं० ॥ घर आये पिण ना सके, असनादिक बहिराय हो । चि० । जिहां पिण बन्दणा ना करे पूजादिक सतकार हो ॥ ५९ चि० हुं० ॥ मारग मिलियां साधजी, जावै मुखने टालि हो । चि० । हाथ उंचो पिण ना करे, करे मान अधिकार हो ॥ ६० चि० हुं ॥ के कोईसो बातां लगे, के किणने लेई तेड़ि हो । चि० । कैते आंख्यां ढाकिले, देवै गरदन फेर हो ॥ ६१ चि० हुं० ॥ ए चारूं सामिल किये, पामे धरम बिशेष हो । चि० । थारो राजा च्यारां माहिला, बोल न पामे एक हो ॥ ६२ चि० चित कहे देश कमोदना, घोड़ा राख्या इगाय हो स्वा० । किण इक काले रायने, मै पिण बिधो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनाथ हो ॥ स्वा० म्हा० ६३ ॥ तिन मिस करिनें आविसु, तुम तणी हजुर हो । स्वा० । उपदेशो निःशङ्क थका, संग होयनें सूर हो ॥ स्वा० म्हा० ६४ ॥ ऊंचे शब्दें प्ररुपज्यो, यशनें पराक्रम ताण हो । स्वा० । शंका को मति राखज्यो, मो सरिखो प्रधान हो ॥ स्वा० म्हा० ६५ ॥ चार ज्ञान तणा धणी, थे छो गुणारी रेल हो । स्वा० । राय परदेशीने लायनें, देस्युं लारे मेल हो ॥ स्वा० म्हा० ६६ ॥ ॥ अथ दोहा ॥ गुरु बोल्यारे जांणस्यै, चिन्ता अवसर देख । सांजलिनें चित्त सारथी, हरखित हुवो विशेष ॥ ६७ ॥ उठिने वन्दना करी, चित आयो निज-गेह । किण विधि लावे रायने, सांजलज्यो सस-नेह ॥ ६८ ॥ मुनि ज्ञानि उपदेश दे, न्याय तणे संबंध । मिस करि आण्यौ रायनें, जिसौ आपणो, छंद ॥ ६९ ॥ ढाल ६ ठी ॥ राग देशी ॥ आई राजानें ईम कहैं, सांजलजो महारायोजी । घोडा देश कमोदना, मे ताजा किया वरायो जी ॥ परम दलाली चित करेजी (ए टेक) ॥ ७० ॥ सांजलज्यो नरनारीजी । चित सरिखा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपगारिया, बिरला ईण संसारोजी ॥ ध० ७१ ॥ मुझनें आप सुंपा हुंता, सो देखोले चौडेजी । अवसर बरतै एहवो, घोडा किसा ईक दौडेजी ॥ ध० ७२ ॥ राय परदेशी चित तणों, मान्यो बचन अनूपोजी । राजारैं बहुली अछै, घोडा देखण चोंपोजी ॥ ध० ७३ ॥ रथमें घोडा जोतीया, उपर बैठो रायोजी । चित बैठो खेडवा जणी. केइ योजन ले जायो जी ॥ ध० ७४ ॥ आंम्हा साम्हा दोडावीया. छाया जाण उमेदोजी । परदेशी तब ईम कहै, चितमें पाम्यो बू खेदो जी ॥ ध० ७५ ॥ राय परदेशी इम कहै, चित ! अवसरनो जांणोजी । सघन छाया छै बागनी, रथ उनो राख्यो आणोजी ॥ ध० ७६ ॥ धरम कथा केशी कहै, उंचै उंचै सादो जी । राय परदेशी देखिनें, मन पाम्यो विषवादो जी ॥ ध० ७७ ॥ चित ! बैठ्या कुंण जड मूढ ए, कुंण जड करे सेवाजी । पंडित नहिं ए अजाण छै, काढण लागो केवाजी ॥ ध० ७८ ॥ ए धरम कहै दीपै घणों, ईण मूढा मध्य थापो जी । स्युं एहनो रोजगार छै । रोक्यो सघलो बागोजी ॥ ध० ७९ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मे तिहां बैठि सकू नहीं, मो मन एहची आईजी। जेती मुझने ऊपनी, चितनें तेह सुणाई जी॥ ध० ७०॥ चित कहै सुण ए मोटका, केशी श्रमण कुमारो जी। बिचरत आया बागमें, पांचसै मुनि परिवारो जी॥ ध० ७१॥ बालपणै व्रत आदर्‍यो, तजी मोह ने मायाजी। सरधा एहनी छै खरी, जुदा कहै जीव काया जी॥ ध० ७२॥ चितना वचन ईस्या सुणी, बोल्यो इम महारायोजी। जो चित ए नर योग्य छै तो हम जाई चलायो जी॥ ध० ७३॥ हां स्वामी नर मोटका, बचन कानमें घाल्या जी। राजा चित बिहुं जणा, केसी समण पै चाल्या जी॥ ध० ७४॥ राजा आय ऊभो रह्यो, ऊंचो न किधो हाथो जी। आवो बैठो नहिं मुनि कह्यो, पछि-तायो नरनाथो जी॥ ध० ७५॥ मुनि कहै नृप सरि मालिनें, जो करि विनदै वाहै जी। तिको पुरुष खरडै कठी, स्वांमी ऊजड खरडै चाहै जी॥ ध० ७६॥ इण दृष्टांते रायतें, जाण्यो मांहरो डांणो जी। तैं ऊंचो हाथ कियो नहीं योंही ऊभो आणों जी॥ ध० ७७॥ बाग मांहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुझ देखिनें, थारा मनमें ईम आइ जी । कुंण बैठा जड मूढ ए । चितनें सबतें सुणाईजी ॥ ध० ८८ ॥ तुमनें चित ! चरचा करी, चलिने गोपें आयोजी । आवो बैठो साधो ना कहि, आयनें तब पछितायो जी ॥ ध० ८९ ॥ एहै अरथ सांचो अछे, हा स्वांमी ए सांचोजी । दोनुं हाथ जोडी लिया, जाण्यो मारग नहीं काचो जी ॥ ध० ९० ॥ वलतो राजा ईम कहै, स्वामी कहोतो बैसोंजी । गुरु कहै जागा ताहरी, बैसण में किम कहिस्यो जी ॥ ध० ९१ ॥ पूछे राय-स्वामी प्रते, ज्ञान दरसण कोई थांमेजी । मनरी बातें किम कही । उत्तर द्यो स्वांमी म्हांनें जी ॥ ध० ९२ ॥ अथ दोहा ॥ राय परदेशी गुरु प्रतै, पूछै धरि करि चाव । किण प्रयोगे जाणीयो, म्हारो मनरो भाव ॥ ९३ ॥ च्यार ज्ञान मो कने छै, सुण परदेशी राय । केवल ज्ञान तो छै नहि, इम जाण्यो मन भाव ॥ ९४ ॥ नंदी सूत्तरमें कह्यो, न्यायरा अरथ लगाय । गुरु कहै राय सरध लै, जूदा जीवनैं काय ॥ ९५ ॥ वलतो राजा इम कहै, जीव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काय छै एक। सरधा ए म्हारी खरी, धार राखी छै विशेष ॥ ९८ ॥ पहिलो प्रसनै इम कहै, सांजलज्यो मुनिराय। म्हारो परदादो हुंतो, इण सेतंविकारे मांय ॥ ९७ ॥ ढाल ७ मी ॥ गोयम समुद कुंमार ॥ ए देशी ॥ अधरमी अवनीत, चलतो म्हारी रीत, दादो इम तणो ए। पापी हुंतो घणो ए ॥ ९८ ॥ पाखंडी प्रचंड, लेतो अकरा दंड, प्रदुखिया सुखि ए। प्रसुखिया दुखिए ॥ ९९ ॥ तुम कहणी मुनिराय, हो गयो हुसी नरकां मांहिं, हेत दादा तणो ए, मोसुं होतो अतिघणोए। २०० । आय दादो कहै आप,पोता मत करि पाप, हूं नरक पड्योए, पाप घणो कर्योए ॥ १ ॥ ईम कहै दादो आय, तो मानुं मुनिराय, नहीतर माहरीए। प्रगन्या छै खरीए ॥ २ ॥ गुरु कहै हेत लगाय,सुण प्रदेशी-राय, राणी ताहरीए। सुरीकंता खरीए ॥ ३ ॥ पहेरि उंढ जलनाय, सहु सिणगार वणाय, से जगहैणा तणीए। जलुसाइ अति घणीए ॥ ४ ॥ कोइ पुरुष अनेरो आय, कांम जोग विलसाय, निजर थारी पडैए। दंड कुंण सो करैए ॥ ५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहै केडुं हाथो न पाय, शूलि देउंरे चढाय, सिर काट धरुंए, जीव रहित करुंए ॥ ६ ॥ उनरे तोसुं करे अरदास. मोनै महलो नातीलारै पास, हुं जायने कहुं खरोए । मो जिम मति करोए ॥ ७ ॥ हुं दुःख पाउं आप. परनारीनें पाप, तोतुं जाणदे ए । विसामो खाणदे ए ॥ ८ ॥ बात न मानुं एह, मो अपराधि तेह, खिण मात्र सहीए, ढीलो मेलुं नहिए ॥ ९ ॥ गुरु बोल्या सुण राय, इतरै गुनैह कराय, अलगो न जाणदे ए, विसामो न खाण दे ए ॥ १० ॥ थांरइ दादै बोलव्या कुड, संच्या पापना पूर, जाय नरके पड्योए । जंजीरा जड्यो ए ॥ ११ ॥ पल सागरनी मार, विण भुगतां निरधार, बुटवो नहिं ए । इम जाणो सहि ए ॥ १२ ॥ करै परमाधामी घात, ज्यांहरि पनरै जाति, रुखवाला घणां ए । दुःख नरक तणा ए ॥ १३ ॥ चाहै सीखडुं जाय, पण दादो न सकै आय, मार घणीपडैए, ढीलो नही करैए ॥ १४ ॥ तिण दृष्टांते मान, जूदा जीवने काय, फेर जाणो मतिए । म्हैं झूठ न बोला जतिए ॥ १५ ॥ थे जली कही मुनिराय, पिण म्हारी न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवी दाय, जुगत मेलो घणी ए। बुध थाहरी निरमली ए ॥ १६ ॥ सुण स्वांमी मुझ बात, धर्मिणी थी साख्यात, दादी हम तणी ए। नव-तत्व विध जणी ए ॥ १७ ॥ करती पडिकमणो पचखाण, सुणती साधांरी वांण, चालती तंत मैं ए। ऊंडा थांरा पंथमें ए ॥ १८ ॥ म्हारी दादी साम, करती धर्मरो काम, तप किरिया घणी ए। चतुराइ जणी ए ॥ १९ ॥ सांचा मुनिना थाट, टलै दुःख उचाट, तुम कहैणी सही ए। देव लोकां गइ ए ॥ २० ॥ हुं दादी नइ अंत, हुंतो इसटनै एकंत, अ.पणा गोडतीए। आघो न छोड-तीए ॥ २१ ॥ देवलोक थी आय, दादी कहै इम आय, पोता धर्म कराए, ए मांग छै खराए ॥ २२ ॥ एसी दादी कहैवाय, तो मानुं मुनिराय, नाहिं तो माहरो ए। मत झाल्यो खरोए ॥ २३ ॥ गुरु कहै सांभल राय, कोइ देव पूजणनें जाय, असनान मंजण करी ए। धूपणो कर धरी ए ॥ २४ ॥ कोइ श्वेतखानारे मांहिं, जगी कहै वत लाय, आवो पगधरो ए। मोसुं बातां करो ए ॥ २५ ॥ जाय कै नही जाय, उत्तर दे मोनै राय,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांमी सुचाइ घणी ए । न जाय तिण नणीए ॥ २६ ॥ गुरु कहै सांनलि एम, थारी दादी आवइ केम, डुरगंध इहां तणी ए। ऊंची जावइ घणीए ॥ २७ ॥ पांच सइ जोयण लग जाय, दादी न सकै आय, नेह लगै नवइ ए । सुखमें मगन हुवैए ॥ २८ ॥ देवन सकै आय, नव नेह लपटाय, सुखमें जिलै जिठै ए । आदि करै कठैए ॥ २ए ॥ मोह-रत नाटक सार, वरस जाय दस हजार, पिछ्यां खपै घणी ए । कहै किण नणीए ॥ ३० ॥ पल्ल सागरनी थित, महल देवीनै चित्त, मोह रह्या सहीए । आय सके नहींए ॥ ३१ ॥ राय समझि इणि न्याय, जुदा मानि जीव काय । राजा कहै वलिए, बुद्धि थारी निरमलीए ॥ ३२ ॥ ज्ञानी पुरुषो छो आप, ज्ञान तणो परताप । हेत मलो सहीए, मो दिल वेसै नहींए ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ तिजो प्रश्न गुरु प्रते, एम पूछे राजान । सना मध्य प्रनु एकदा, बैठो करि मंडाण ॥ ३४ ॥ सेठ सेनापति मन्त्रवी, देखतां सहु कोय । कोटवाल एक चोरने, आणि सुंपियो मोय ॥ ३५ ॥ में परिखा करवा नणी, घाल्यो कुंनी मांह । काठो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जडीयो ढांकणो, संधि न राखी कांय ॥ ३६ ॥
लोह कुंजी लोह ढांकणो, सीसा संधि जराय।
रखवाला सुधि राखीया, काल किसी विध जाय ॥
३७ ॥ पाछे कुंजी ढांकणो, में खोल्यो मुनि सोय।
चोर मूवो आतम गयो, छिद्र हुवो नहीं कोय ॥
३८ ॥ निकलतो देख्यो नहीं, हुवो न कोई
छेक। काया जीव जुदा रे, हुं किम मानुं टेक ॥
३९ ॥ जीव काया एकीज छै, यह म्हारो मन
साच। एहवी वात सुणी करी, बोल्या मुनिवर
वाच ॥ ४० ॥ ढाल ८ मी सुख कारीनी चाल ॥
सांभली परदेशी, कुडागार एक साल। बाहिर
मध्य लिपी, ऊंडी गंभीर विशाल ॥ ४१ ॥ मांहे
वायु न पैसे, आडा बजर किवाड। कोई ढोल
लेईने, नर पैसे तिणवार ॥ ४२ ॥ पेठा पछे ढांके
किवाड, छिद्र नवि रहाय। पक्को काम ज्युं
कीधो, चूना पिठी लगाय ॥ ४३ ॥ ते मांहि
बजावे, मोटे शब्द भेरी ढोल। ते बाहिर सुणे
के नहीं, गुरु कहै राजा बोल ॥ ४४ ॥ ते सुणिये
स्वामी, एम बोल्यो नृप वाच। सांभलि गुरु
भाखे, छिद्र पड्यो कोई राय ॥ ४५ ॥ जेम शब्द

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुज्ञलनी, बाहेर निकल्यो जाय। ए जीव अप्रतिहत, ते कहो किम लखाय ॥ ४६ ॥ परवतादिक नेदके, जीव निकलीनें जाय। तिण कारण सरधो, जुदी जीवने काय ॥ ४७ ॥ वलि बोल्यो नरपति, थे कहो हेत लगाय। निरमल बुद्धि थाहरी, पण नावे मुऊ दाय ॥ ४८ ॥ वलि एक दिन स्वामी, बैठो मोटे मंडाण। कोटवाल मुऊ ने, सोंप्यो चोर एक आन ॥ ४९ ॥ तहने मारीने, घाल्यो कुंनी जाण। काठो बांडिनें राखायो, पाछे काढ्यो आन ॥ ५० ॥ तिण मांहि स्वामी कीडा पडिया दीठा सोय। ते पेठा किण विधि, छिद्र न दीठो कोय ॥ ५१ ॥ जो छिद्र पडंतो, तो मानतो मैं सोय। नहीं तो सुणि स्वामी, साच मत छे मोय ॥ ५२ ॥ गुरु कहे राय दीठो लोह, धमीयो अनलानाल। हां दीठो स्वामी, अगनि वरण होय लाल ॥ ५३ ॥ वहि सघले परिणमी, पेठि मांहि संनाल। कोई छिद्र पड्यो तिहां, किम हुवो जालोजाल ॥ ५४ ॥ राय कहे छिद्र नवि हुवो, तव गुरु बोल्या एम। जीव परवत नेदे, कुंनी छिद्र हुवे केम ॥ ५५ ॥ सरधो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुं परदेशी, ए जिन आगम वाण। राय कहे जुगते मेलो, पण मुज नावे दाय ॥ ५६ ॥ प्रश्न पूछे पांचमो, गुरु प्रते राजान। कोई तरुण पुरुष होई, सकल कला परधान ॥ ५७ ॥ समरथ होई प्रभु ते, बाण वाहनने काज। होवे हां समरथ. वलि बोल्यो नृप आम ॥ ५८ ॥ कोई हुवे बालक, बुद्धि रहित विज्ञान। ते बाण नाखिवा. समरथ हुवे राजान ॥ ५९ ॥ तो सरधा करिने, मन लखो ए मान. नहींतर मुज साचो, जीव काय.नो ज्ञान ॥ ६० ॥ गुरु कहे राजा प्रते, कोई हुवे तरुण जवान। घणी बुद्धि चतुराई, नवो धनुषने बाण ॥ ६१ ॥ ते बाण खेंचिवा, समरथ होई राजान। हां होवे स्वामी वलि, गुरु बोल्या ताम ॥ ६२ ॥ तुम तरुण चतुर नर, डाह्या निपुण ज्युं होय। सब साज मिल्या पिण, जीवा तुटी सोय ॥ ६३ ॥ तो खेंचन समरथ, होय नहीं के होय। उपगरण अधूरा. तव गुरु बोल्या जोय ॥ ६४ ॥ बालक ते नानो बुध, प्रगमी नहीं जाण। तरुणा नरनी परे, ते किम खेंचे बाण ॥ ६५ ॥ तिम सरध ले राजा, खोटो मत मति ताण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राय कहे दिल नावे, थे कहो ज्ञानने मान ॥ ६६ ॥ वलि सांजलो स्वामी, तरुण पुरुष होवे सार । समरथ होई वाहिवा, लोहादिकनो नार ॥ ६७ ॥ तेहिज होई वृद्ध जो, जरी देह निरधार । लकडी लेई हिंडे, पड्या दांतने दाढ ॥ ६८ ॥ चाले मांदो नूखे, तृषाय डुरबल देह । लोहादिक वाहिवा, समरथ होतो तेह ॥ ६९ ॥ तो सरधतो स्वामी, जीव काय जूदा एह । नहींतर नहीं मानुं, नगो प्रश्न सुनेह ॥ ७० ॥ उत्तर गुरु नाखे, कोईक नर राजान । होय चतुर विचक्षण, ते वलि तरुण जुवान ॥ ७१ ॥ नवां डोरी ठींका, वांस करंडक जान । ते नार उपारने, जाणे विधि विज्ञान ॥ ७२ ॥ ते उपारन समरथ, राजन्! ते किम थाय । होई स्वामी समरथ, वलि गुरु बोल्या वाच ॥ ७३ ॥ ते नर होवे तुरनो, कावड डोरो सुलजाय । करंडक सुलजावे, वांस लकडी जीव खाय ॥ ७४ ॥ समरथ होवे वहेवा, लोहादिकनो बोज । राय कहे नहीं समरथ, जुना उपगरण होय ॥ ७५ ॥ होय सब विधि समरथ, जुना उपगरण जाय । तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोझ उपाडे, राय कहे नहीं आस ॥ ७६ ॥ उप-गरण जांजे, वलि तो गुरु कहे चोज। बुढो उपाडे, हीन इन्द्रि वलि खोज ॥ ७७ ॥ तिणसो नहीं समरथ, वहेवा कावड जार। जुदा जीव काय छै, शंका म करि लगार ॥ ७८ ॥ राय कहे ज्ञान बुद्धिसों, हेत मिलावो श्याम। पण जीव काया जिन्न, दिल नहीं बेसे आम ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ पूछे प्रश्न सातमो, श्रीगुरुनें राजान। प्रत्युत्तर दे किण विधि, ते सुणजो धरि ध्यान ॥ ८० ॥ ढाल ९ मी धरम मङ्गल महिमा निलोए, एचाल ॥ एक दिवस जरी परखदा, बैठो थो सजा मांहे। नगर गुतीए चोरटो, सोंप्यो मुझ आन। प्रश्न पूछे नर सातमो ॥ ए टेक० ८१ ॥ ज्ञान प्राप्तिने काज, सद्गुरु मोटा जेटीया, तारण तरण जहाज ॥ प्र० ८२ ॥ में चोर जीवतो तोलीयो, पछे कर्यो उपाव। गल मसोसीने मारीयो, नहीं शस्त्र लगाय ॥ प्र० ८३ ॥ मारीने फिर तोलियो, घट्यो वढ्यो न लिगार। तिण कारण में जाणीयो, जीव काया नहीं न्यार ॥ प्र० ८४ ॥ चोर मुवाने जीवते, फेर पडतो स्वाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो हुं न्यारो सरधतो, तुम कह्यो जे आम ॥ प्र० ७५ ॥ तो ते मो मत छै खरो, जोव काया छै एक । एहनो उत्तर मुनि कहे, युगत मेलि विशेष ॥ प्र० ७६ ॥ मसक वाय भार मुंदिया, मुनि देखि राय । हां दिठी नृप कहे, बोल्या फिर मुनिराय ॥ प्र० ७७ ॥ पर उपगारी इम कहे, समझावण हेत । आप तरे पर तारहि, खुल्या ज्ञाननां नेत्र ॥ प्र० ७८ ॥ वाय भरी तोले दीवडी, पछे काढ दे वाय । वलि तराजु तोलवे, किसो फेर दिखाय ॥ प्र० ७९ ॥ राय कहे प्रभु ना घटे, नहीं बडे तिल मात । वलि गुरु भाखे नृप तुं, देख लेने साख्यात ॥ प्र० ८० ॥ हलको भारी ना हुवे, वायु काढे राजान । तो अन्तर नहीं जिय गये, इम श्रद्धा चित्त आन ॥ प्र० ८१ ॥ राय परदेशी इम कहे, ज्ञाने पूरा छो आप । हेत युगत जाणो घणा, ज्ञान तणे प्रताप ॥ प्र० ८२ ॥ इम मो बेसे नहीं, शंका छै मुनिराय । प्रश्न आठमो, वलि कहे सुणजो ते चित्त लाय ॥ प्र० ८३ ॥ दोहा ॥ वाको प्रश्न आठमो, कहे गुरासुं राय । हुं मोटो मंडाण कारी, बेठो परिषद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांय ॥ ९४ ॥ कोटवाल एक चोरटो, आणी सुंपियो मांय । में पारख करिवा भणी, खंड कीधा तन होय ॥ ९५ ॥ तो पण जीव न देखियो, जब खड कीना चार । आठ सोल संख्या किया, पण जीव न दिठो न्यार ॥ ९६ ॥ जीव निकलतो दिखतो, तो में मानतो संत । तेणि दिठो जाणीयो, म्हारो मत छे तंत ॥ ९७ ॥ ढाल १० मी ॥ गुरु कहे राजा तुं एहवो ए, कठीयारा मूरख जेहवो ए । वलतो राजा कहे एम ए, सामी कठीयारा मूरख केम ए ॥ ९८ ॥ गुरु कहे चाज लगाय ए, सांभल परदेशी राय ए । कठीयारा अटवी वाटमें ए, भेला मिल चाल्या काठने ए ॥ ९९ ॥ आया अटवी मांहि ए, मसलत कीधी मांहो मांहि ए । हम सब चल जीतरी ए, कठीयारा मिल एकण भणी ए ॥ ३०० ॥ अमें नारी ले आवीयें जेटले ए, भोजन तैयार करें तेटले ए । लाकडी थोडी १ आपशुं ए, थारी भारी करीने थापशुं ए ॥ १ ॥ तुं रहे प्रमादमें लाग ए, तो बूझ जावली आग ए । तो लिजे काष्ठ अरणीसुं काढ ए, किजे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम सरव विधिशुं ए ॥ २ ॥ एम शिक्षा दीधी घणी ए, आया चाली अटवी तणी ए। एटले जागीने देखीयो ए, अग्नि खीरो बुझीयो देखीयो ए ॥ ३ ॥ हिवे किम निपजावुं आहार ए, तो काढुं काष्ठने फाड ए। बांधी कमर फरसी झालने ए, आयो काष्ठ पे चालने ए ॥ ४ ॥ घणे जोर थकी तसु दोय ए, टुकडा कीधा तिनि सोय ए। नजर पडी नहीं आग ए, जब चार आठ सोल जाग ए ॥ ५ ॥ जब संख्याता खंड किया ए, तो जी अग्नि दिखाई नवि दियो ए। इम कहि डुखी ते होय ए, सोंपी कुण विपदा मोय ए॥ ६ ॥ हुं अधन्य अपुन्य अजाग ए, हिवे काढुं किहांथी आग ए। मोंने सुंप्यो कुण जंजाल ए, फरसी हेठी नाखी राल ए॥ ७ ॥ आरत करे अण वातरा ए, मोने कासुं कहेला साथरा ए। आरत रुद्र ध्यान रह्यो झाल ए, करी निचो माथो घाल ए ॥ ८ ॥ ज्युं २ आर्त्त करे जिठे ए, आंसु दोय चार पडे तिठे ए। एटले कठियारा आवीया ए, आरतरा लखण पिछानीया ए ॥ ए ॥ कहे आरत ध्यान किम करे ए.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब विलखो होईने बोलतो ए। थे कारज गया बतायने ए, मोसुं गरज सरी नहीं काय ए॥ १०॥ निद्रा काष्ठ अगनि तणी ए, सहु वात कही साथ्या जणी ए। अग्नि निकली नहीं काठ मांहि ए, तिणसुं दुःख पडियो आय ए॥ ११॥ इण कारण दीलगिर हुवो ए, जाई जिहां दुखे तिहां पीड ए। मांहोमांहि सहु इम जणे ए, आपां रह्या जागसे जड तणे ए॥ १२॥ एटलामें डाह्यो एक ए, चतुराई वात विशेष छै ए। जाण कला सरवे तणी ए, काष्ठमें लाकडी मथी ए॥ १३॥ अगन सधुखी पाड ए, निपजावी चार आहार ए। स्नान संपाडा करी सेत्र ए, पछे पूज्या घरका देव ए॥ १४॥ जला होई जोजन करे ए, सहु चलु कर मुछण मुख धरे ए। सब जीमे ताजा होइ ए, तिण मूर्खने कहे जोइ ए॥ १५॥ तें क्रोध कीधो दिल मांहि ए, पिण अकल नहीं तुझ मांहि ए। इम पाडिजे आग ए, सैसा चतरना माग ए॥ १६॥ कठीयारो मूढ अजाण ए, लकडीसुं मांडी ताण ए। अग्नि पाडण नहीं पारखो ए, राजा तुं कठीयारा सारीखो ए॥ १७॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राय कहे मुनिवर त्तणी ए, परखदा आइ मिली घणी ए। थे बो अवसरना जाण ए, मुने बोल्या बो करडी वाण ए ॥ १७ ॥ यह देख परखदा लोक ए, थांने मूरख कहणो जोग ए। गुरु कहे राजा जाण एटली ए, परखदा चाली बे केटली ए ॥ १९ ॥ हां स्वामी जाणुं ते सार ए, परखदा चाली बे चार ए। नाम कहे किसा २ ए, ते राजा कहे हिवे तिसा ए ॥ २० ॥ क्षत्री गाथा पूर्व ब्राह्मण तणी ए, ऋषीश्वरनी चोथी त्तणी ए। गुरु कहे तुं जाणे इस्यो ए, ए चारि अपराध्यांने दंड किस्यो अे ॥ २१ ॥ हां स्वामी जांणुं दंड ए, अपराध्यांनो प्रचंड ए। राजानो खून करे तरे ए, बेदी जीव काया न्यारा करे ए ॥ २२ ॥ न्यातनो अपराधी थाय ए, तिसे वाले तिणायें लगाय ए। ब्राह्मणनो खूनी घणो ए, लंबन देवे श्वान कागा पग तणो ए ॥ २३ ॥ के कुंडलनें आकार ए, दीजे दाग मध्य निलाड ए। निरजंबे वारमवार ए, काढीजे न्यातसुं बहार ए ॥ २४ ॥ ऋषीश्वरासुं वांका वहे ए, ज्यांने उढ मूरख इस्यो कहे ए। गुरु कहे वचन तें ना सह्यो ए, राजा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थारे मुखे तें कह्यो ए ॥ २५ ॥ में निकल्या कदाग्रह ठंडने ए, परखदा सारु दंडने ए। तुं प्रश्न पूछे वांकडो ए, जे क्रोध व्यापणनो टांकणो ए ॥ २६ ॥ न करे वीतराग वैर ए, पण छद्मस्थांरी लहेर ए,। मोसुं वांकी चरचा करी घणी ए, में जड मूरख कह्यो तुझ जणी ए ॥ २७ ॥ तब वलतो बोल्यो राय ए, सुणजो स्वामी म्हारी वाण ए। हुं पहिले प्रश्न बुझियो ए, म्हारो कर्त्तव्य थाने सुझियो ए ॥ २८ ॥ म्हारी कही मनोगत बात ए, तबही समज्यो स्वामीनाथ ए। हुं आडी तेढी आणतो ए, प्रश्न पूछया जाणतो ए ॥ २९ ॥ ज्ञान तणी प्राप्ति जणी ए, में वांकी चरचा करी घणी ए। ज्युं २ पुछवाड की तरे ए, इण जिन धरमनी खबर पडी ए ॥ ३० ॥ हुं जाणुं जीव अजीव ए, समकित चारित्रनी नीव ए। में मन विचार इसडो कियो ए, हुं जाणने वांको वरतियो ए ॥ ३१ ॥ जाणपणे सुधरे काज ए, एटले बोल्या मुनिराय ए। राय जाणे तुं एटला ए, व्योपारी चाल्या केटला ए ॥ ३२ ॥ जाणुं हुं स्वामी चार ए, ज्यारा न्यारा २

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचार ए। एक देवे पण करडो बोल ए, निठ२ गांठडी खोल ए ॥ ३३ ॥ दूजो नरमाइ करे घणी ए, पिण पोंच नहीं देवा तणी ए। तीजो सनमान दे बहु धरे ए, चोथो उलटी धकाधुमी करे ए ॥ ३४ ॥ गुरु कहे चार मांहि ए, कुण व्यवहारी कहाय ए। हावक थुवक आण ए, ले जावे दरबारमें ताण ए ॥ ३५ ॥ मुखसे काढ गालीयो ए, थारो बाप दादो दिवालीयो ए। कुण कहे व्यवहारीयो ए, रायने कहे किम थें धारीयो ए ॥ ३६ ॥ राय कहे व्यापारी तीन ए, चोथो नहीं प्रवीण ए। बलता गुरु बोल्या तरे ए, राजा तुं पेला व्यापारी परे ए ॥ ३७ ॥ वांका प्रश्न बातां कही ए, पण जाणुं तु व्रत लेसी सही अे। में लाधो थारो पारखो अे, तुं पहिला व्यापारीनी सारखो अे ॥ ३८ ॥ जद कह्यो राजा खेदे जयों अे, पिण अेटलो कह्या ठंढो पड्यो अे। कांइ खुशामदी नहीं करी अे, समजायो निज न्यायथी अे ॥ ३९ ॥ आगा कह्या हेत जुगत अे, तिणसुं बेगी मिले मुगत अे। माहरो मत सुन कह्यो 'अे, राजा सूत्र अनुसारे में लह्यो अे ॥ ४० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोहा ॥ गुरु प्रते राजा कह्यो, थे अवसरना जाण । गुरु उपदेश जलो कह्यो, निपुण गुणानी खाण ॥ ४१ ॥ शरीर मांहिथी काढीने, समरथ छो अतीव । आंवला प्रमाण मो हाथमें, जूदा दिखावो जीव ॥ ४२ ॥ ढाल ११ मी जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर, अदेशी ॥ तिणे कालने तिणे समेजी, राय प्रदेशीने पास । वृक्ष तणाजे पानडाजी, वाय हलावे तास ॥ ४३ ॥ मुनिसर उत्तर दीधो अेम ॥ जेहना प्रश्न पुछियोजी, निष्फल जाय कहो केम ॥ मु० ४४ ॥ मुनिवर पूछे रायने जी, अे कोण हिलावे पान । देव असुर नाग किन्नरा जी, जात गंधर्व प्रधान ॥ मु० ४५ ॥ राय कहे नहीं देवता जी, जात गंधर्व न हिलाय । वृक्ष तणा अे पानडा जी, हिलावे वायुकाय ॥ मु० ४६ ॥ गुरु कहे तुं देखेय छे जी, रुप सहित वायुकाय । कर्म लेश्या वेद सहित छे जी, राग मोह कहेवाय ॥ मु० ४७ ॥ राय कहे देख्यो नहीं जी, तव गुरु बोल्या अेम । वायु रुप देखे नहीं जी, तो जीव दिखाउं केम ॥ मु० ४८ ॥ छदमस्थ देखे नहीं जी, दश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानक राजान। देखे तो श्रीकेवली जी, तुं जीवकाया जूदा मान ॥ मु० ४९ ॥ प्रश्न दशमो राजा कहे जी, सांभलजो मुनिराय। जीव समो हाथी कुंथवो जी, हुंतो किम मुनिराय ॥ मु० ५० ॥ राय कहे हाथी थकी जी, कुंथवा ने थोडा कर्म। क्रिया आश्रव आहारनो जी, श्वासोश्वास रुध जर्म ॥ मु० ५१ ॥ हाथी ने कुंथवा थकी जी, क्रिया कर्म बहु थाय। जाव क्रांत रिध अति घणो जी, हुंतो कहे मुनिराय ॥ मु० ५२ ॥ राय कहे जीव सारिखो जी, न्युनाधिक क्यों क्रांत। तब गुरु राजाने कहे जी, दीवानो दृष्टान्त ॥ मु० ५३ ॥ अति मोटी शाला मध्ये जी, दीवा मेलो जोय। आडा जडे किवाडने जी, छिद्र न राखे कोय ॥ मु० ५४ ॥ मांहि दीवो उजालवे जी, अटलो करे प्रकाश। बाहेर ज्योत दीसे नहीं जी, इम जिय लगि आवास ॥ मु० ५५ ॥ सुंडो कुंडो सरावलो जी, आढो पाढो जाय। चोथो उवाने सोलमो जी, बत्तीस चोसठ प्रमाण ॥ मु० ५६ ॥ छिद्र दीवानो ढांकणो जी, दीवो ढांके कोय। तोहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योति मांहि रहे जी, बाहेर ज्योत न होय ॥ मु० ५७ ॥ शाला मध्य ज्योत छे जी, नहीं शालानी बहार । इण दृष्टांते जीवडो जी, बांध्या कर्म अनुसार ॥ मु० ५८ ॥ जेहवो शरीर बांध्यो हुवे जी, जीव असंख्यात प्रदेश । नानी मोटी देहमें जी, सचेतन करे प्रवेश ॥ मु० ५९ ॥ तिण कारण सरदहो जी, जूदा जीवने काय । राय कहे में सरदह्या जी, पण मत छोड्यो नवि जाय ॥ मु० ६० ॥ दोहा ॥ प्रश्न अग्यारमो पूछीयो, मुनिवर दीधो जाब । लोह वणीक छेहडे कह्यो, तब आयो धर्म जाब ॥ ६१ ॥ राय प्रदेशी गुरु प्रते, बोल्यो जोडी हाथ । धरम खरो में जाणीयो, पण बुझो मुनि वात ॥ ६२ ॥ दादा परदादा तणो, दरपिढी नो राह । बडा बडेरा सेवीयो, किम छूटे स्वामीनाथ ॥ ६३ ॥ में तो खरो धर्म जाणीयो, थारो ओ धर्म सार । पण मोसुं छूटे नहीं, मारा बडा बूढारो जार ॥ ६३ ॥ में तो घणा दिन झालीयो, छोडंता आवे लाज । जिम छै तिमही रहन द्यो, गई करो मुनिराय ॥ ६४ ॥ वचन सुणी राजा तणा, गुरु बोल्या वलि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेम । राजा तुं पछतावसि, लोह वाणीया जेम ॥ ६५ ॥ स्वामी कुण लोह वाणीयो, पछितायो कहो केम । स्वामी कहो कृपा करी, जो मुऊ वरते क्षेम ॥ ६६ ॥ ढाल १२ मी चोपईनी देशी ॥ गुरु बोल्या राय सांजल एह, प्रश्न श्रग्यारमांनो उत्तर जेह । केइक वाणीया धनरी चाह, जेला हुइ चाल्या श्रटवी मांह ॥ ६७ ॥ चलतां श्र यो एक उद्यान, तामें देखी लोहा खान । निरधननें होइ लोहा धन्न, तेहनें देखी हरख्या मन्न ॥ ६८ ॥ जाणे गयो हम दारिद्र दूर, सबनें लोह उपाड्यो पूर । धनना अरथी आगल गया, तांबा खान देखी हरखीया ॥ ६९ ॥ सबही लोह दिया तिहां डाल, तांबो बांध लीयो ततकाल । तिणमें लोह वाणियो श्रेक, लोहनें सेंठा कीयो विशेष ॥ ७० ॥ साथी बोल्या तिणसु श्रेम, छांडे नहीं लोह तुं केम । तांबासु लोह श्रावे घणो, जार छोडिदे लोहा तणो ॥ ७१ ॥ प्रत्युत्तर जाखे तिणवार, दूर थकी में लायो जार । में कीधी खप युं ही जाय, तिण कारण छोडुं नहीं जाय ॥ ७२ ॥ तिहांथी चलीने आगे गया, तब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते खाण रुपानी लह्या। सब तांबो तज रुपो लीयो, उन मुरखनो हठ नहीं गयो ॥ ७३ ॥ आगे दीठी सोना खाण, तिमहीज दीठी रत्नारी खाण। डाल दियो सब पीतलो न्नार, लीना बांधी रत्न अपार ॥ ७४ ॥ लोह वाणीयो टेक न तजे, सब समझावे लोह न तजे। लोह रतननो अन्तर बहु, अबलग सरिखा होशे सहु ॥ ७५ ॥ लोह वाणीयो बाल्यो वाय, छोडे मेले करे बलाय। में तो न्नार लीयो सो लीयो, तुमने छोड न मेल न कीयो ॥ ७६ ॥ मूढ वाणीयो इणविध कही, तुमें मान कछु दीसे नहीं। जब साथ्यां सघला जाणीयो, अे साचुं बोल्यो लोह वाणीयो ॥ ७७ ॥ साथ्यां शिख दीधी घणी, पिण ते मुरखे नेक न गणी। सघला पाछा आया तिणवार, पहुताछे आपण घरबार ॥ ७८ ॥ न्नारी माल लाया ते घरे, अेक रतननो विक्रय करे। तेहना आया छे बहु दाम, दाम थकी सुधरे सहु काम ॥ ७९ ॥ गहेलो मनुष्य कोइ थाय, धनथी बुद्धि दूसरी आय। सात खणा कीना आवास, नरनारी बेठा सहु पास ॥ ८० ॥ मादल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाजी रह्या धधकार, बत्तीस विध नाटक होय सार । विलसे कामादिक बहु जोग, पुन्य थकी सब मिलीयो संजोग ॥ ७१ ॥ हिवे ते लोह वाणीयो आय, लोह लइ घर पेठो मांय । लोह वेचीयो गठडी खोल, आयो थोडो तेहनो मोल ॥ ७२ ॥ थोडा दिनमें दीयोरे निठाय, लारे १ कुनार गई ते खाय । घरमांहि आइ दारिद्र जूख, तेहि थकी देहि गइ सुक ॥ ७३ ॥ एक पावलो लारे रखाय, तेहना फूलीचणारे मंगाय । फीरतो २ शहर मझार, ते आयो साथ्याके द्वार ॥ ७४ ॥ महेल साहमो ऊंचो जाल, देखि २ तन उठे जाल । ज्युं देखे त्युं सोचज करे, पण सोच्यां अब गरज न सरे ॥ ७५ ॥ साथ्यां तणी न मानी शीख, हाय पडी मुजने अब धीक । अधन्य अपुन्य पाप मुझ घणो, काली पीली अमावस जाणो ॥ ७६ ॥ दूरंत पंत लक्षण मुझ मांय, लज्जा दया रही नहीं कांय । पश्चाताप करे मन घणो, वचन न मान्यो साथ्यां तणो ॥ ७७ ॥ तेहनी परे समझी तुं राय, विन समझे पाछे पछताय । प्रश्न अग्यारमानो उत्तर एह, साजली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा हरख्यो तेह ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ परदेशी प्रतिबोधीयो, सांभली एह दृष्टन्त। हेत युगत करी तारीयो, मिलीया केसी सन्त ॥ ८९ ॥ लोह वाणीये जीम कर्यो, तिम हुं न करुं स्वाम। तुम सरिखा गुरु भेटिया, सही सुधरसी काम ॥ ९० ॥ स्वामी थे मोटा पुरुष, मुझ मन मेटी भ्रान्त हिवे कृपा करी धरमनो, द्यो उपदेश महान्त ॥ ९१ ॥ मुनिवर दीधी देशना, मोटी परखदा मांह। मोटाई मंडाण करी, सुणतां बहु सुख थाय ॥ ९२ ॥ ढाल १३ मी प्रति बुझोरे लही मानव अवतार ॥ अहनी देशी ॥ चेतन चेतोरे दे मुनिवर उपदेश, राखो श्रद्धा धरमनी। चेतन०। परखो देव गुरु धर्म, मेटो माया भरमनी ॥ चे० ९३ ॥ भविजन चेतोरे मनुष जमारो पाय, परमादे पडजो मति। चे०। जरा रोग लगे आय, सेठा रहेजो सों सथो ॥ चे० ९४ ॥ भवि० वासो वसीयो आय, जीव वटाऊ पाहुणो। चे०। चट दे जीव चली जाय, केहने साथे न जावणो ॥ चे० ९५ ॥ भवि० तन मुरछा मति आण, एहनी मकरी तुं चाकरी। चे०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोडी जासी प्राण, देरी कर देइ राखरी ॥ चे० ९६ ॥ जवि० जबलगि जीय घट मांह, तबलगि इन्द्रिय सावती । चे० । जिहां लगे रोग न आय, राखो धरमनी जावती ॥ चे० ९७ ॥ जवि० सत गुरुनी ए शीख, ए अवसर मति चूकजो । चे० । परनिन्दा परनार, तिण नेडा मति ढुकजो ॥ चे० ९८ ॥ जवि० तजे सगाने सयण, छोडे धन संच्यो हाथनो । चे० । तजे लियाने पुत्र, न तजे धर्म जगनाथनो ॥ चे० ९९ ॥ जवि० करजो कछु करतुत, मनुष तणो जव पायने । चे० । मति लीयो नरक ना दुःख, परनी चुगली खायनें ॥ चे० ४०० ॥ जवि० हाथी घोडा ने हाट, इहांका इहां रहसी सही । चे० । पाछे होवेला उचाट, गरज कांइ सरे नहीं ॥ चे० १ ॥ जवि० आथ न चाले साथ, नारी न चाले गेहिनी । चे० । सघली रही पडी वात, छोडी जाइ निज देहडी ॥ चे० २ ॥ जवि० जबलग स्वारथ होय, तबलग मुख जी जी करे । चे० । स्वारथ सरीयां जोय, सामो देख्यां लड पडे ॥ चे० ३ ॥ जवि० एह संसारनो रुप, देखिनें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति बोधज्यो । चे० । काम जोग महा कूप, ते मांहि मति जरझो ॥ चे० ४ ॥ जवि० साधपणों ल्यो सार, काम जोग त्यागन करो । चे० । श्रावकना व्रत बार, शीव रमणी वेगी वरो ॥ चे० ५ ॥ जवि० अल्प आऊखो जाण, तन धन यौवन कारमो । चे० । पालो जिनवर आण, संसार सुख संजारो मति ॥ चे० ६ ॥ जवि० रुल्यो अनन्तो काल, आदि. अनादि प्राणीयो । चे० । रह्यो आज्ञा बार, समकित रहस्य न जाणीयो ॥ चे० ७ ॥ जवि० पाम्या वार अनन्त, आठ पलि सागर तणो । चे० । शुद्ध न मिलिया सन्त, जव सागर रुलियो घणो ॥ चे० ८ ॥ जवि० इत्यादिक उपदेश. जीव शब्दमें जाण जो । चे० । गुरु जाखे धर्म एम, दया जाव दिल आण जो ॥ चे० ए ॥ दोहा ॥ सुगुरु तणी वाणी सुणी, घणो ज रीझयो राय । हाथ जोडीने एम, कहे, सरध्यां तुमारा वाय ॥ १० ॥ परदेशी राजा तिहां, श्रावकना व्रत लीध । लाग्यो रङ्ग मजीठको, जव जव आशा सिद्ध ॥ ११ ॥ गुरुने विना खमा विया, उठण लाग्यो राय । आचारजनो हेत दै,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरु बोल्या इम वाय ॥ १२ ॥ ढाल १४ मी बेबे अरहंतवरंगणतु । ओघर २ माग ए देशी ॥ नृप जाणे छै तुं बहोत ए, आचारजनी केती जात ए। जाणुं बुं स्वामीनाथ ए, आचारजनो तीन ए ॥ १३ ॥ गुरु कहे जाणे तुं अछे ए, कहे तीनुं जात ते केइ छै ए। कला शील्प धर्म आचारज ए, ए तीनुं नाम में धारिज ए ॥ १४ ॥ गुरु कहे राय जाणे इसी ए, यांरी सेवा भक्ति करवी किसी ए, जाणुं स्वामी बिहु तणी ए, कला शिल्प आयरिया भणी ए ॥ १५ ॥ प्रभु अशनादिक आहार ए, जिमावे पूजा सतकार ए। जले न्हावण सजण करी ए, पुष्प मालादिक उर धरी ए ॥ १६ ॥ धन देई वस्त्र पहेराय ए, जे दर पिढी लगे खाय ए। तिण खातां टूटे नहीं ए, तेने एहवो दान दीराय ए ॥ १७ ॥ हिवे धरमाचारजनी भणी ए; स्वामी सेवा भक्ति करवी घणी ए। वन्दना सत्कार सनमान ए, चवदे प्रकारनो दान ए ॥ १८ ॥ ज्याने वचन विनयसुं भाषणो ए, ज्यारो कडप घणेरो राखणो ए। प्राणी भूलो भवाटवी जिण भणी ए, त्याने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारग आणे कृपा करी ए ॥ १९ ॥ जे गुरु दीवो गुरु देव ए, नित कीजे त्यांरी सेव ए। सुगुरु विण घोर अन्धार ए, ज्यांने वंदिजे वारम्वार ए ॥ २० ॥ वलि बोल्या श्रीमुनिराय ए, थारे कासुं छै दिल मांह ए। तुं ऐसो विचक्षण जाण ए, मोंने बोल्यो वांकी वाण ए ॥ २१ ॥ मैं बहों-तेर कला जणी गणी ए, थामें चतुराई दीसे घणी ए। तें पामी समकित सार ए, व्रत श्रावग-डीनो तुं धार ए ॥ २२ ॥ तुं चाल्यो विन खमा-यरे, तो किम आइ दिल मांहि ए। चरचा मोसुं किधी घणी ए, तुं चाल्यो सेतंबिका जणी ए ॥ २३ ॥ नृप कहे सांजलो मुनिराय ए, म्हारे इसडी आइ दिल मांह ए। नगर न्यातमें मो तणो ए, स्वामी अपयश फेल्यो छै अति घणो ए ॥ २४ ॥ म्हारी हुंती खोटी नित ए, म्हारी घणाने छै अप्रतीत ए। हुं रह्यो मीथ्यात्वमें राच ए, कुण माने पापीरी साच ए ॥ २५ ॥ हुं वांको जड हुंतो घणो ए, स्वामी नावे जरोसो मो तणो ए। ए नगरी मांहि जाय ए, कुटुम्ब कबीलो लाय ए ॥ २६ ॥ मोने देखे सघला लोय ए, हुं खमाऊं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीचो होय ए । नरनारी जाणे एहवो ए, अनड नमायो छै केहवो ए ॥ २७ स्वामी ए दिल मांहि धारीने ए, में जाणते वन्दना ना करी ए । गुरु बोल्या इम वाय ए, राजा ज्युं तुऊने सुख थाय ए ॥ २८ ॥ में एहवो निश्चय धारियो ए, राजा उठी सेतंबीका चालियो ए । तव नगरी मांहि जाय ए, कुटुम्ब जेलो कियो राय ए ॥ २९ ॥ सबही न्यातीना लोग ए, ज्यारो घणो मिलीयो संजोग ए । सूरीकंतादिक राणीया ए, राजा रथ बेसारी आणीया ए ॥ ३० ॥ अधिक धर्मसुं प्रेम ए, राजा चढीयो को णीक जेम ए । गज होदे असवार ए, नृप चाल्यो मध्य बाजार ए ॥ ३१ ॥ ते मृगवन मांहि आय ए, हाथीसुं उतर्यो राय ए । तिहां देखंता सहु कोय ए, खमावे छै नीचो होय ए ॥ ३२ ॥ राजा पांचे अंग नमाय ए, गुरु लागे ललि २ पाय ए । तब सब नरनारी जाणीयो ए, पापीने पैडे आणीयो ए ॥ ३३ ॥ नरनारी सुख पाम्या घणो ए, जलो होजो इण गुरु तणो ए । सहु मनरी पुगी मन रली ए, घणां जीवाके ठारक पडी ए ॥ ३४ ॥ ढोडाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दियो मत खोटको ए, समझायो राजा मोटको ए। मोटो मारग वहे जिन तणो ए, तो पाखंडी दविया रहे ए ॥ ३५ ॥ जो मोटो समझे धरममें ए, तो घणा जीव पडे शरममें ए। देखादेखी होय धरम ए, देखादेखी बांधे करम ए ॥ ३६ ॥ धन २ केशी स्वाम ए, सान्या परदेशी ना काम ए। तिहां परखदा बैठी आय ए, धरम देशना दे मुनिराय ए ॥ ३७ ॥ कही आगम वाणी अनूप ए, जामें तीनुं लोकनुं सरुप ए। सभाइ हरखित थाय ए, मुकायो परदेशी राय ए ॥ ३८ ॥ जिणे ऐसी जुगत बनाय ए, तिणसुं मिले वेगी मुगत ए। भेटे गुरांजीरा पाय ए, धरम आयो घणोई दाय ए ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ उठण लागो तिण समे, गुरु कहे रहिजे ठीक। पहिले रमणिक होयने पछे मति होय अरमणीक ॥ ४० ॥ कैसो रमणिक प्रभु, अरमणिक होय केम। वलितो गुरु एसो कहे, सांभलजो धरि प्रेम ॥ ४१ ॥ इखु क्षेत्र ने अखला, वागन नाटक सार। प्रवर्त्तता रमणिक होय, पछे अरमणिक भूपाल ॥ ४२ ॥ ढाल १५ मी सिंधु रागनी देशी ॥ इक्षु रस हेतोरे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यांरा पाका खेतोरे, रसरो बहु चालोरे, वहे घाणीरा नालारे, नित झाक झमालाहो, चीड लगी रहेरे ॥ ४३ ॥ इक्षु पीलीजेरे, खाइजेने दीजेरे, रस बहुला पीजेरे, देखी २ ने रीझेरे, जब लागे रमणिक हो, खेत सुहामणोरे ॥ ४४ ॥ खाइ पीइने आयारे, ठिकाणे लगायारे, सुना हुवा खेतोरे, मांहे ऊडे रेतोरे, अरमणिक इण हेतो हो, राजा में कह्योरे ॥ ४५ ॥ बागा गहरी गयारे, मांझरीया आयारे, घणो फूल्यो फलीयोरे, फल भारे ढलीयोरे, जब लागे रमणिक हो, बाग सुहामणोरे ॥ ४६ ॥ केइ आवेने जावेरे, बहु चीजां खावेरे, पामे ऋतु शातारे, पान नीलांने रातारे, इण कारण रमणिक हो, लागे सुहामणोरे ॥ ४७ ॥ फागुण वाय वागेरे, पान झडवा लागेरे, निकल गया डालारे, फल नहीं रसालारे, अति काला डंकाला हो, बाग अशोभतारे ॥ ४८ ॥ नटवानी शालारे, गावे गीत रसालारे, बाजा ताल बजावेरे, बहु देखन आवेरे, नटशाला सुहावे हो, राजन् अति घणीरे ॥ ४९ ॥ जलसुं मुख नावेरे, हरताल लगावेरे, स्वांग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवा २ आणेरे, नाचे रुप रसाणेरे, जब लागे राजन हो, शाला सुहामणिरे ॥ ५० ॥ दिन आयो उगीरे, नाटक जाय पूगीरे, लोग लागा ठिकाणेरे, नट लाग्या आपण कामेरे, दिनरी तो लागे हो, शाला अशोजतीरे ॥ ५१ ॥ राते जाग्या हुंतारे, ते पडिने सूतारे, मुख काजल रेखारे, आंख्या गीडज दीखेरे, शुन्य दीखे नट शाला हो, लोक अशोजतारे ॥ ५२ ॥ लाटा धान गाहिजेरे, खाइजेने दिजेरे, उपजे धान ज्यादोरे, ढेर कियो अगाधोरे, जब जादोरे लाटा हो, चेल लागी रहेजी ॥ ५३ ॥ धूरने वले वोहरोरे, मिलिया ठोर ठोरारे, हाकम ने लुटारारे, जाचकादिक सारारे, वणजारा सोदागर हो, लेणा जोमीयारे ॥ ५४ ॥ चोधरी पटवारीरे, तुलायत ओडारीरे, काय थकी चुंगारे, केइ लेता तुंगीरे, जब लागे रमणिक हो, लाटा चेलसुंरे ॥ ५५ ॥ लाटाकुं तोलि आयारे, ठिकाणे लगायारे, जीडज गइ जागीरे, रेत उडवा लागीरे, अरमणिक लागे हो, लाटा अशोजतारे ॥ ५६ ॥ हिवे थारे ऊाऊारे, वराग्य छै ताजोरे, धर्म पायो रसीलोरे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडे पड जाय ढीलोरे, तुं फागुण सरिखो बाग हो, राजा मति हुवेरे ॥ ५७ ॥ हिवडा मैं बैठारे, थारा नाव छे सैठारे, मैं विहार करी जावांरे, अन्यगाम सिधावांरे, तुं मटके बैरागी हो, राजा मति हुवेरे ॥ ५८ ॥ चारे रमणिकोरे, दिधी तोपे शीखोरे, धरम पायो छे नीकोरे, इणमें रहि ठीकोरे, जो टीको तुज आवे हो, शिव रमणी तणोरे ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ अरमणिक प्रभु में नहीं, धरम थकी अनुराग। सात सहस गाम खालसे, करुं तिणरा चोभाग ॥ ६० ॥ एक भाग राणीयां निमित्त, एक भाग खजान। एक भाग हाथी घोडला, एक भाग देउं दान ॥ ६१ ॥ मोटी शाला मंडायनें, अशनादिक निपजाय। श्रमण मांहण साक्यादिनें, दुर्बल दान दिराय ॥ ६२ ॥ आपे दिधां बरत जे, पालुं चोखा स्वाम। पोसा पडिकमणां करी, सारुं आतम काज ॥ ६३ ॥ इत्यादिक बोली करी, नम्या गुरुना पाय। भाव सहित वंदना करी, आया जिण दिस जाय ॥ ६४ ॥ केशि सरिखा गुरु मिल्या, चित्त सरिखा परधान। एसा पापी जीवने, आप्यो धरमको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम ॥ ६५ ॥ ढाल १६ मी, वेगे पधारो महे-
लथी, ए देशी ॥ गुरु वांदि पाछा गया, पहुता
नगर मझार । चार भाग किया राजनो, आप
हो बेठो न्यार ॥ ६६ ॥ वैरागे मन वालीयो (ए
आंकडी) सुणी साधांजीरो वाण । दया भाव
दिलमें रुच्यो, चित्त ठिकाणे आण ॥ वै० ६७ ॥
परदेशी राजा हिवे, मोटी शाला कराय । अश-
नादिक निपजायने, दुर्बल दान दिराय ॥ वै०
६८ ॥ परदेशी श्रावक थयो, हुवो नवतत्वनो
जाण । डीगायो डीगे नहीं, जो देव चलावे
आय ॥ वै० ६९ ॥ पोसह पडिकमणां करे, शील
व्रतनो नेम । सेंठी पाले आखडी, देव गुरु धर्मसु
प्रेम ॥ वै० ७० ॥ चौदे प्रकारनो दान दे, साधांने
निर्दोष । हाडमें जिन धर्मसुं, रंगे हरखे पात्र
पोष ॥ वै० ७१ ॥ देव गुरु धर्म परिखने, मोटो
समकित धार । संका कंखा ना करे, रूच्या प्रव-
चन सार ॥ वै० ७२ ॥ जिण दिनसुं व्रत आदर्यो,
राजा देश भंडार । बल वाहन राणीयो भणी.
न कहे आवो पधार ॥ वै० ७३ ॥ नोकर चाकर
परिवारशुं, उतर्यो मननो राग । परभवनी खरची

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नणी, रात दिन रह्यो लाग ॥ वै० ७४ ॥ बेला २ नो पारणों, तपस्या करे छै अनङ्ग । मोक्ष नणी उठ्यो सही, करवा करमसुं जङ्ग ॥ वै० ७५ ॥ करडो हुंतो राजवी, पायो जिनवर धर्म । ज्यारे लागि रसायणा, एहवो हो गयो नर्म ॥ वै० ७६ ॥ गुण इत्यादिक छै घणां, जेम श्रावककी रीत । केसी गुरु परतापथी, गयो जमारो जीत ॥ वै० ७७ ॥ दोहा ॥ ज्यां लगि धर्म पायो नहीं, करतो मोटा पाप । संसार्यांनें न सुहावतो, पडती तेहनी ढाक ॥ ७८ ॥ सूरिकंता राणी इस्यो, हुंतो नृपसुं प्यार । राणी नाम सुत नो दीयो, सूरिकंत कुमार ॥ ७९ ॥ स्वारथनां सहु को सगां, जोइ जो इण संसार । किणविध विरचे कंतसुं, सूरिकंता नार ॥ ८० ॥ कुण बेटा कुण पोतरा, कुण नार्याने नाय । स्वारथ लगि नेहा करे, परमारथ मुनिराय ॥ ८१ ॥ ढाल १७ मी विछियानी देशी ॥ हिवे राणी मन चिन्तवे, एतो नरम गयो नूपालरे । सार करे नहीं राजरी, मोने लाग्यो कुण जंजालरे । तुमे जुओरे स्वारथरा सगा ॥ ८२ ॥ केसी श्रमण ज्युं आयने, इण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कैसी शीखामण दीधरे। म्हारो एसो जोरावर राजवी, सोतो धरम गहेलो कीधरे॥ तुमे० ७३॥ इणसुं गरज न को सरे, नहीं चले राजनो त्तारेरे। किणहि जहरादिक जोगसुं, इणने नाखुं माररे॥ तुमे० ७४॥ सूरिकंत कुमर जणी, हुंतो ले बेसारुं राजरे। तब काम चले म्हारा राजरो, म्हारा सिऊसी वंछित काजरे॥ तुमे० ७५॥ एसी मनमें तेवडी, एतो कुमर बोलायो पासरे। जेटली मन मांहि उपनी, सहु कही सुतने प्रकाशरे॥ तुमे० ७६॥ बेटा तुं बापने मारदे, कीसी शस्त्र जहरने जोगरे। जिम राज बसारुं तो जणी, मीट जावे दुःखने शोकरे॥ तुमे० ७७॥ कबु हित प्यार गिण्यो नहीं, इण वंठी धणीनी घातरे। एतो किणहीसुं लाजी नहीं, तुम जोवो नारीनी वातरे॥ तुमे० ७८॥ कुंमर सुणी मन चिन्तवे, आतो दुःष्टिणी दीसे मुऊ मातरे। म्हारो पिता दुष्टी हुंतो, लोईसुं खरड्या रहेता हाथरे॥ तुमे० ७९॥ एतो ना कह्यो माता छे बूरी, हा हा किम मारूं मुऊ बापरे। कुमर जाण अवसर तणो, तेतो हुई रह्यो चूपचापरे॥ तुमे० ८०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेतो अणबोले उठी गयो, राणीने न दीयो जवाबरे । तब राणी मन जाणीयो, हा हा म्हारी जासी आबरे ॥ तुमे० ए१ ॥ में तो कह्यो थो हित जणी, कुमरने नावि दायरे । बाहर बात हुवा थका, मुझ पडे गलेमें आयरे ॥ तुमे० ए२ ॥ कुमर कहे रखे रायने, म्हारी छानी रहे नहीं वातरे । जब लग कोउ मिले नहीं, तो लुं कंतनी करुं घातरे ॥ तुमे० ए३ ॥ एतो अबला गति नारी तणी, इण कोइ न मानी वातरे । इतनो मन नहीं सोचीयो, म्हारा खाली होइ जासी हाथरे ॥ तुमे० ए४ ॥ इम मन मांहि विचारने, कद राय एकलो देखरे । एतो छिद्रादिक जोती फिरे, देखी राजाने एकंतरे ॥ तुमे० ए५ ॥ एतो हाथ जोडीने इम कहे, मोपे कृपा करो महारायारे । थारे बेलानोठे पारणो, जिको मौन रहिज्यो आजरे ॥ तुमे० ए६ ॥ एतो मुख उपर मीठी घणी, मांडे छै बहुली प्रीतरे । मांहि घात खेले घणी, एतो डुश्मन केरी रीतरे ॥ तुमे० ए७ ॥ कुण माता कुण छै पिता, कुण नारी कुण जायरे । डील वस्त्र वैरी हुवे, जब कर्म उदय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुवे आयरे ॥ तुम० ९८ ॥ वारमवार राणी कहे, परदेशीने वायरे । राणी उपाव करे केसो, ते सुणजो चित्त लायरे ॥ तुम० ९९ ॥ एतो पहिलो सगपण पिउ तणो, वली बीजो व्रतनो धाररे । तीजा तपसी वैरागीया, करुणा न आणी लगाररे ॥ तुम० ५०० ॥ श्रावकना व्रत लिधा पछे, तप तेरा बेलानो कीधरे । एक उण चालीस दिना, राजा जलग नगारा दीधरे ॥ तुम० १ ॥ दोहा ॥ राय प्रदेशी न जाणीयो, राणी तणु ए कूड । अशनादिकमें मेलीयुं, संघले वीषनुं पूर ॥ २ ॥ विधिशुं करी बिछामणा, उपर मेल्या थाल । भोजननी तैयारीयां, आइ बेठा भूपाल ॥ ३ ॥ विविध परे भोजन हुंता, जीमत आइ लहेर । राय प्रदेशी जाणीयो, राणी दीधो जहेर ॥ ४ ॥ जहर उतारण विधि घणी, जाणेछे भूपाल । धीक २ इण संसारने, जीवो केता काल ॥ ५ ॥ विष निवारण मुदडी, हुंती नृपनी पास । परभव उपर मांडीयो, जारे किसी जीवणरी आश ॥ ६ ढाल १० मी वेवे मुनिवर वहोरण पांगुर्यारे एदेशी ॥ राजा उठ्यो वेग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सितावसुंरे, न आण्यो राणी द्वेषरे। उजल कर-
कस वेदन उपनिरे, राख्या समता नाव विशे-
षरे॥ जोयजोरे समकित रस परिणम्योरे ॥ ७ ॥
जिन मारगने चाढी शोजरे, एसीतो विषमता
कोइ विरला केरेरे, जीत्या छै तृष्णा मोहनें
लोजरे॥ जो० ८ ॥ आगेतो बीचमें अब वैराग-
नोरे, आयो मन मांहि अधिको जोसरे। वेदनी
करम संच्या छै माहरेरे, नहीं राणीनो कोइ
दोषरे ॥ जो० ए ॥ दाह ज्वर तनमें एसो
उपनोरे, बलतो हुवो छै सारी देहरे। औषध
वेषध कोइ नवि कर्योरे, राजा देहीशुं नाण्यो
नेहरे ॥ जो० १० ॥ पुत्र नारीने सज्जन घर
थकीरी, मुल न आण्यो माया मोहरे। हेल
हकारो मुखसे ना कियोरे, धरमशुं लाग्यो अंतर
नेहरे ॥ जो० ११ ॥ मनरो तो जोस करीने
वेगशुंरे, आयो राजा पोषध शाला मांहिरे। जागा
पडिलेही लघु वडी नितरिरे, डाजादिक किया
संथारा ठायरे॥ जो० १२ ॥ आसन बेठा पूर्व
दिशि मुख करीरे, लीया दोनुं माथे हाथ
चढायरे। नमोत्थुणं कियो सिद्धां नणीरे, जब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थे मुगति बिराज्या जायरे ॥ जो० १३ ॥ बीजो नमुत्थुणं अरिहंता नणिरे, तीजा वलि केसी श्रमणने कीधरे। धरमाचारज मोटा माहिरारे, पूरब में श्रावकना व्रत लीधरे ॥ जो० १४ ॥ हिवडां तो व्रत माइरे इमहिज छेरे, नवरं तिविध २ विशेषरे। इहां तो में लउं सास आखडिरे, उहां तो आप रह्याछो देखरे ॥ जो० १५ ॥ पाप अठारा सघला पचखिनेरे, आहार चारे पचख्या जासरे। इष्टकांति काया करंडिया समिरे, वोसरावी छै लेवे श्वासोश्वासरे ॥ जो० १६ कथाकारमें राणी इम जाणीयोरे, रखे जीवणरो करे उपायरे। सुख समाधि पूछण मिसेरे. राजाने पूरो पाडुं जायरे ॥ जो० १७ ॥ ढाल १९ मी पेसानी ॥ राणी मांड्यो छेडपलाने शोकोरे, मारा वाला तणोरे विजोगोरे। म्हारो कोइ नाम न लेजोरे, मुनें दरसण देखण देजोरे ॥ १८ ॥ राणी एहवो कियो कूडोरे, उमरावाने कीधो दूरोरे। तिणे कपट एहवो केलव्योरे, म्हारो अबके छेहलो मेलोरे ॥ १९ ॥ म्हारे आडो परेच खींचावोरे, राणी मांहे गइ छै चालीरे,। इण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एहवो अकारज कीधोरे, जाइने गल टूंपो दीधोरे ॥ २० ॥ पुनः ढाल ॥ पिण परदेशी अति क्षमा करीरे, राख्यो धरमसुं रुडो ध्यानरे। ऐसी क्षमा जो कोइ साधु करेरे, तेहने उपजे पूरण केवल ज्ञानरे ॥ जो० २१ ॥ तेरमा बेलानो हुंतो पारणोरे, आलोयनिंदि निश्चल थायरे। कालने अवसर मरण लही करोरे, सुरयाभ देव हुवो छै जायरे ॥ जो० २२ ॥ पांचे परजाय करी अति दीपतोरे, पहिला देवलोक ततकालरे। क्षमाने करणी कीधी अति घणीरे, अल्प दिना में व्रतने पालरे ॥ जो० २३ ॥ इम निश्चय करी गौतम जाणजोरे, सुरयाभ लहि देव रुध एमरे। ज्योतिने क्रांति वधी छै एहनीरे, थेट नीजाया लीधा नेमरे ॥ जो० २४ ॥ दोहा ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, यह परदेशी राय। ततकाले सूर उपनो, नाटक कीयो आय ॥ २५ ॥ चार पल्योपम आउखो, देवो नाटक तान। सुर विमान परखद तणां, भाव कह्या वर्द्धमान ॥ २६ ॥ वलि गौतम पृछा करी, विनयवंत धरी हेत। सूरियाभ स्थित पूरी करी, चवीने जासी केत ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२७ ॥ ढाल २० मी वीर सुणो मोरी विनती परदेशी ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, ए चवसी हो सूरियाज्ञ देव। महा विदेह क्षेत्रने विषे, जन्म लेसी हो जिहां सुख नित मेव ॥ वीर० २८ ॥ महल सुखासण पालखी, मणि माणेक हो मोती घन सार। सोनो रूपो अति घणो, अवतरसी हो जरीया ज्ञंडार ॥ वीर० २९ ॥ रथ हाथी घोडा अति घणा, दास दासी हो बहुलो परिवार। प्रज्ञुता घणी अन नाखिता, अवतरसी हो तिण कुलमें आय ॥ वीर० ३० ॥ ए जीव गरजे अवतर्या, मात पिता हो धरमे दृढ थाय। पूरे मासे जनमसी, जनम तिथी हो करसी बापने माय ॥ वीर० ३१ ॥ पहिले दिन नाल छेदसी, दिखलासी हो तीजे दिन चंद सूर। छठे दिन छठीज गावसी, अशुची करसी हो इग्यारमें दिन दूर ॥ वीर० ३२ ॥ आंगणे गुडल्या खलावसी, बेहु पगलां हो हाथे थिरी कराय। जीमण कंवल वधारिवो, बोलावण हो करसो कान विंधाय ॥ वीर० ३३ ॥ वरस गांठ चोटी राखसी, करे मुंडण हो खरचे बहु वित्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाल अनेरा छै घणा, इत्यादिक हो बालकनी थित ॥ वीर० ३४ ॥ गरनथकी मांडी करी, जन्म लेइ हो कला लग जाण । करसी रक्षा अति घणी, रुध्धि पूरण हो मोटे मंडाण ॥ वीर० ३५ ॥ पांच धाया पालिजसी, अने हो खोजा दास्याने साथ । दासी अठारह देशनी, इणने लेसी हो सहु हाथो हाथ ॥ वीर० ३६ ॥ एक थकी बिजी लीये, बेसारे हो निज खोला मांय । हियडा सेती नीडने, सुख नोगवता बलि नाचतां जाय ॥ वीर० ३७ ॥ गीत हाल-रिया गावतां, बजावसी हो बजवणां जोर । रमकडां बालक तणां, बाल लीला हो करसी बहु कोड ॥ वीर० ३८ ॥ किहां बेसे सुवे किहां, किहां पासाथी हो दोडीने जाय । चुंबन गाल करतां थकां, जिण दिठा हो नयण ठराय ॥ वीर० ३९ ॥ रत्न जडीत आंगण नणी, तिण चालतां हो वाधे देखिने प्रेम । व्याधि रहित सुखमें बढे, गिरि कंदरमें हो चंपालता जेम ॥ वीर० ४० ॥ मात पितादिक कुंवरने, बरस आठनो हो जाफेरो जाण । न्हाइ धोइ शण-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गारिने, शुन्न वेला हो तिथी मुहूरत मान॥ वीर० ४१॥ कला आचारज पासही, ते नणावशे हो इण कुंवरने आण। कला बहोत्तर पुरुषनी, इणने करसी हो बहु गुणनो जाण॥ वीर० ४२ ॥ कला सूत्र अर्थ नणायने, गुरु देसी हो माइताने सुंपि। देसी घणी वधामणी, वस्त्रादिक हो आन्नरण अनूप॥ वीर० ४३॥ बहुत्तर कला नण्या थकां, कुमर होसी हो बुध निधान। जोबन वय व्याप्यां थकां, शूरवीर हो होसी गुणनी खाण॥ वीर० ४४॥ नाषा अढारे देशनी, विचक्षण हो डाहो होसी जाण। नव अंग सुंदर शोन्नतो, नाटक चेटक हो गीतने गान॥ वीर० ४५॥ हसण बोलण चालण विषे, घणी होसी हो चतुराइ चुंप। जुऊ करी परने हराय दे, अणसिणगारे हो होसी रुप अनूप॥ वीर० ४६॥ नोग संजोग समरथ होसी, तह बिहतो हो फिरसी काल अकाल। मात पिता बहु धामसी, अन्न पाणी हो सयणासण चाल॥ वीर० ४७॥ पिण कुमर राचे नहीं, काम नोगनो हो लोलुप नहीं थाय। पंकेरुह कासारमें, जल-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेती हो रहे उंचो सदाय ॥ वी० ४८॥ काम कादौ करी उपनो, जोग पाणी हो वधीयो छै तेह। पिण न लीपे काम जोगशुं, लगावे नहीं हो कासुं निवीड सनेह ॥ वीर० ४९ ॥ साधु समीपे बुझसी, घर त्यागी हो होसी अणगार। पंच सुमति तीन गुपति सों, घोर तपस्या हो करसी अतिसार ॥ वीर० ५० ॥ निर्दोष आहार जोगवे, जे जीते हो मोह माया ने मान। उत्कृष्टी करणी करी, उपजासी हो अन्ते केवल ज्ञान ॥ वीर० ५१ ॥ दोहा ॥ हिवे दृढप्रज्ञा केवली, जाणसी सरव उपाय। दरसण करीने देखसी, तीन लोकनो जाव ॥ ५२ ॥ गत आगत सब जीवना, पुन्य पाप अहिनाण होय हुवे होशे सही. तीनो कालनो जाण ॥ ५३ ॥ अनाचार छानां करे, प्रगट चवडे होय। दृढप्रज्ञानी केवली जणी, छानो रहे नहीं कोय ॥ ५४ ॥ जिण कारण जीव खप करे, उदय होसी आय। इण सरीखो दिसे नहीं. तीन लोकने मांय ॥ ५५ ॥ ढाल २१ मी धरम हिये धरो ए देशी ॥ केवल ज्ञान पाया पछे, विचरसी कितो एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काल । घणा वरस उपगार करे, केवल प्रज्ञापा- लोरे ॥ धन जिन धरम ने ॥ ५६ ॥ तिणथी शीव सुख थायोरे, डुःख दोहग टले, दालिद्र दूर पलायोरे ॥ धन० ५७ ॥ शेष आउखो थाक- तां रे, अणसण करसी सार । चार आहार पच खीनेरे, घणा जगति विस्तारोरे ॥ धन० ५८ ॥ जिण कारणने उठियोरे, करसी नगन ज्युं जाव । स्नान नहीं दातण नहींरे, लोच शील तप चावारे ॥ धन० ५९ ॥ छत्रधार मनही नहींरे, सोयवो जूमिका पीठ । जीक्षारथ अटन केरेरे, लाज अलाज सम दिठोरे ॥ धन० ६० ॥ मान अपमान कोई दियेरे, हेला निंदादिक अनेक । सहे बचन लोका तणोरे, साहसे राखे धरम टेकोरे ॥ धन० ६१ ॥ एह अरथ आराधनेरे, छेहले श्वासो- श्वास । सिद्ध बुद्ध मुकायनेरे, करसी शिवपुर वासोरे ॥ धन० ६२ ॥ वीर जिणंद गौतम प्रतेरे परदेशी कह्यो जाव । सांजल श्री गौतम कहेरे, त- हत वचन जगवानोरे ॥ धन० ६३ ॥ राय पसेणी सूत्रमेरे, एह कह्यो अधिकार । जणे गुणे श्रवणे सुणेरे, पामे जवजल पारोरे ॥ धन० ६४ ॥ सूत्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरुध जे में कह्योरे. अधिको ओछो कोई। ऋषि जेमल एम कहेरे, मिच्छामि दुक्कडं मोयंर ॥ धन० ६५ ॥

इति ऋषि जयमल कृत

परदेशी राजाको चौपाई सम्पूर्णम्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलनेका पताः—
श्रीगुलाबकुमारी लाइब्रेरी।
नं० ४६ इण्डियन मिरर ष्ट्रीट, कलकत्ता।

Serving JinShasan
098730
gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only